वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक
जनवरी 16–31, 2025

हिन्दू विश्व

इलावृत से प्रयागराज तक की ऐतिहासिक यात्रा

@eHinduVishwa
/HinduVishwa

उज्जैन (म.प्र.) में विहिप–मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी द्वारा आयोजित शक्ति संगम कार्यक्रम को संबोधित करती पूज्य 'दीदी माँ' साध्वी ऋतम्भरा जी तथा कार्यक्रम में उपस्थित मातृशक्ति/दुर्गावाहिनी की कार्यकर्त्रियाँ

दिल्ली में मंदिरों के सरकारी नियंत्रण से मुक्ति को लेकर देशव्यापी जन–जागरण अभियान की घोषणा करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद पराण्डे जी तथा साथ में उपस्थित केन्द्रीय प्रचार प्रसार प्रमुख श्री विजयशंकर तिवारी

देहरादून (उत्तराखण्ड) में विहिप–देहरादून विभाग की विभाग बैठक को संबोधित करते विहिप सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे

दिल्ली में बजरंग दल की त्रिशूल दीक्षा कार्यक्रम में उपस्थित विहिप–संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन, बौद्ध संत पू. राहुल भंते जी, पू. साध्वी दीप्ति माँ, क्षेत्र संगठन मंत्री श्री मुकेश खांडेकर, दिल्ली प्रांताध्यक्ष श्री कपिल खन्ना तथा कार्यक्रम में उपस्थित बजरंग दल के कार्यकर्ता

न्यूजीलैंड की हिंदू काउंसिल के एक प्रभाग रोटोरुआ के हिंदू हेरिटिज सेंटर में विश्व ध्यान दिवस का आयोजन

इस पक्ष में ....

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हे पूषादेव ! आपकी मैत्री भावना के ज्ञाता वीर पुरुष अपनी पुरुषार्थ क्षमता एवं आपके संरक्षण से सभी उपभोग्य पदार्थों को प्राप्त करते हैं। इस प्रकार से सभी मनुष्य अपने पुरुषार्थ से हीं उपभोग्य सामग्री को प्राप्त करने के लिए किसी की दया के पात्र नहीं बनते। उस श्रेष्ठ बुद्धि के अनुशासन के अधीन रहकर आपसे हम धन की कामना करते हैं। हे बहुसँख्यकों से स्तुत्य पूषादेव ! आप प्रत्येक संघर्षशील संग्राम में हमारा सहयोग करें।। – ऋग्वेद

16-31 जनवरी, 2025
माघ कृष्ण - शुक्ल पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. - 2081, युगाब्द- 5126

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा, धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार, रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना
- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

इलाबास से इलाहाबाद और अब पुन: प्रयागराज

07

महाकुंभ का आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और आर्थिक महत्व....	05
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 साल	09
वैश्य समाज इस्लामिक जिहाद के आतंक से कब सतर्क होगा	11
मंदिर केवल ईंट-पत्थरों की इमारतें नहीं यह हमारी पहचान भी है	12
वैगा जनजाति की परंपरा का अमिट हस्ताक्षर जोधइया बाई	14
यूपी के मिनी पंजाब में फिर खालिस्तानियों की दस्तक	16
पीली सरसों का बहुआयामी महत्व	18
गुणों से भरपूर कढ़ी पत्ता की सूखी चटनी	20
विहिप ने की देशव्यापी जन-जागरण अभियान की घोषणा	21
समरसता संगोष्ठी	22
बजरंग दल के युवा कार्यकर्ताओं ने ली त्रिशूल दीक्षा	23
उज्जैन में विहिप-मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी का शक्ति संगम आयोजित	24
सेवा विभाग के सेवाव्रती कार्यकर्ताओं का अभ्यास वर्ग सम्पन्न	25
केन्द्रीय सोशल मिडिया प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न	26

सुभाषित

सा बुर्द्धिविमलेन्दु शंख धवला या माधवव्यापिनी।
सा जिह्वा मृदुभाषिणी नृप मुंह यां स्तौति नारायणम्।।

वही बुद्धि निर्मल और चन्द्रमा तथा शंख के समान उज्ज्वल है, जो सदा भगवान माधव चिन्तन में संलग्न रहती है तथा वही जिह्वा मधुरभाषिणी है, जो बारम्बार भगवान नारायण की स्तुति किया करती है।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

वामपंथियों का दोमुंहापन

वामपंथियों ने श्रीरामजन्मभूमि आन्दोलन का सर्वाधिक विरोध किया, आन्दोलन को बदनाम करने की कोशिश की, न्यायालय में चल रहे मुकदमे को विलम्बित करने की भरपूर चेष्टा की, जिनको आर्कियोलॉजी का ज्ञान नहीं था, ऐसे क्षद्म वामपंथी इतिहासकारों ने रामजन्म भूमि मन्दिर की आर्कियोलाजी के बारे में झूठे तथ्य लिखे, न्यायालय में प्रस्तुत किया, अनेक बार हुए द्विपक्षीय वार्ता को विफल करने में भी इनकी बड़ी भूमिका रही। किन्तु जब मन्दिर बनने लग गया, प्राण प्रतिष्ठा हो गई, तो भगवान के दर्शन में ये वामपंथी और इनके परिवार वाले किसी से पीछे नहीं रहे। भगवान के विरोध में भी ये खड़े रहे और दर्शन में भी खड़े हैं। ऐसा दोमुंहापन ये कैसे कर पाते हैं? वामपंथियों ने सबरीमला का आंदोलन केरल में चलाया, महिलाओं को उकसाया अयप्पा मन्दिर में जाने के लिए। कुछ महिलाएँ किराया देकर तैयार कराई गईं, लेकिन केरल की एक भी महिला जो रजस्वला आयु की हैं, अयप्पा मन्दिर नहीं गईं। यहाँ तक की इन वामपंथियों के घरों की महिलाएँ भी नहीं गईं, सबरीमला के अयप्पा मन्दिर।

जल्लिकट्टू समेत अनेक उत्सवों का विरोध किया। लेकिन उत्सव मनाने में भी ये पीछे नहीं रहते। ये दुर्गा पूजा के आयोजन का विरोध करेंगे, न्यायालय में विरोध में मुकदमा करेंगे और फिर एक पंडाल से दूसरे, तीसरे पंडालों में घुसकर पूजा करते भी नजर आयेंगे। गणेश उत्सव का विरोध भी करेंगे और आयोजन भी करेंगे। वैशाखी का विरोध भी करेंगे और भांगड़ा भी करेंगे। जन्माष्टमी, रामनवमी, होली, दशहरा, दिपावली सब मनाते हुए ये वामपंथी दिख जायेंगे और विरोध करते हुए भी दिख जायेंगे।

सीताराम नाम रखेंगे और रावण के पक्ष में भाषण देंगे। नाम होगा करूणानिधि और भाषण करेंगे राम के विरोध में। नाम होगा ज्योति और अंधकार फैलाने की बात करते मिलेंगे, नाम बुद्धदेव होगा लेकिन मूर्तिपूजा का विरोध करते दिखाई देंगे। मूर्ति बना दो, तो पूजा करते भी दिखाई देंगे। अनेक वामपंथी जो शास्त्रों का, वेदों का अध्ययन करते हैं और पूछ दो तो कहेंगे कि विरोध करने के लिए पढ़ना जरूरी है। अकेले में पूछो, तो सर्वहारा की बात करने वाले ये वामपंथी स्वयं के ब्राह्मण होने की बात करते हुए, शास्त्र अध्ययन को प्रमाणित करने लगेंगे। शास्त्रों के अध्ययन की परम्परा और शास्त्रों की सुरक्षा की बातें करने लगेंगे। व्यक्तिगत वार्ता में मन्दिरों की सुरक्षा की बात करेंगे, लेकिन सार्वजनिक जीवन में राजनीतिक विरोध करते दिखाई देंगे।

इस्लाम और ईसाईयत के खतरे को जानते हुए भी उनके विरूद्ध सार्वजनिक रूप से एक शब्द भी नहीं कहेंगे। हमसे वार्ता में कई वामपंथियों ने कहा कि विश्व हिन्दू परिषद और बजरंगदल अच्छा कर रहे हैं। लेकिन जब उनको कहो कि आप भी इस दिशा में सोचो, तो बस तुरंत पलटी मार लेंगे। गजब का दोमुंहापन है भाई। वामपंथियों के दोहरेपन को समझना आसान नहीं है। हिन्दू महिलाएँ माथे पर बिंदी लगाना शुभ मानती हैं, वामपंथी पार्टियों की शीर्षस्थ महिलाएँ भी बिंदी लगाने में पीछे नहीं रहती। पर हिन्दू परम्पराओं को गाली देने से नहीं चूकते। ऐसे दोमुहें वामपंथियों पर भला हिन्दू समाज विश्वास करे भी तो क्यों करे? इसलिए ही आज वामपंथ दम तोड़ रहा है।

इस्लाम और ईसाईयत के खतरे को जानते हुए भी उनके विरूद्ध सार्वजनिक रूप से एक शब्द भी नहीं कहेंगे। हमसे वार्ता में कई वामपंथियों ने कहा कि विश्व हिन्दू परिषद और बजरंगदल अच्छा कर रहे हैं। लेकिन जब उनको कहो कि आप भी इस दिशा में सोचो, तो बस तुरंत पलटी मार लेंगे। गजब का दोमुंहापन है भाई। वामपंथियों के दोहरेपन को समझना आसान नहीं है। हिन्दू महिलाएँ माथे पर बिंदी लगाना शुभ मानती हैं, वामपंथी पार्टियों की शीर्षस्थ महिलाएँ भी बिंदी लगाने में पीछे नहीं रहती। पर हिन्दू परम्पराओं को गाली देने से नहीं चूकते।

महाकुंभ का आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और आर्थिक महत्व एवं इसकी सामाजिक समरसता

पंकज जगन्नाथ जायसवाल

आधुनिकता की उन्मत्त गति की विशेषता वाली दुनियाँ में कुछ ही आयोजन ऐसे होते हैं, जो लाखों लोगों को अपने से बड़े उद्देश्य की खोज में एकजुट करने की क्षमता रखते हैं। महाकुंभ मेला, 12 वर्षों की अवधि में चार बार होने वाला एक श्रद्धेय मेला, इस उद्देश्य का उदाहरण है। कुंभ मेला दुनियाँ भर में सबसे बड़ा शांतिपूर्ण सम्मेलन है, जिसमें करोड़ों तीर्थयात्री आते हैं, जो अपने पापों को शुद्ध करने और आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने के लिए पवित्र नदियों में डुबकी लगाते हैं। तीर्थयात्री 13 जनवरी से 26 फरवरी तक प्रयागराज की अपनी यात्रा की तैयारी करते हैं, वे आध्यात्मिक अनुष्ठानों की एक श्रृंखला में भाग लेंगे और एक ऐसी यात्रा पर निकलेंगे, जो भौतिक, साँस्कृतिक और आध्यात्मिक सीमाओं को पार करती है।

हर हिंदू उत्सव और अनुष्ठान के पीछे शास्त्रीय आधार होता है। उन्हें जोश और उत्साह के साथ–साथ एक ठोस वैज्ञानिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक आधार के साथ सम्मानित किया जाता है। ये सभी विशेषताएँ मिलकर किसी त्योहार को मनाने या अनुष्ठान करने का कारण प्रदान करती हैं। इन अनुष्ठानों का उद्देश्य किसी व्यक्ति को आध्यात्मिक मार्ग पर ले जाना है, जहाँ वे पूर्ण मनोवैज्ञानिक संतुलन, नवीनीकरण और विश्राम प्राप्त कर सकें।

महाकुंभ मेले के कुछ वैज्ञानिक तत्व इस प्रकार हैं — महाकुंभ मेला एक ऐसा उत्सव है, जिसमें विज्ञान, ज्योतिष और आध्यात्मिकता का समावेश होता है। महाकुंभ की तिथियों की गणना वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करके की जाती है, जिनमें से अधिकांश ग्रहों की स्थिति का उपयोग करते हैं। जब बृहस्पति ग्रह ज्योतिषीय राशि वृषभ में प्रवेश करता है, तो यह सूर्य और चंद्र के मकर राशि में प्रवेश के साथ मेल खाता है। यह परिवर्तन जल और वायु को प्रभावित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्रयागराज के पवित्र नगर में पूरी तरह से सकारात्मक वातावरण बनता है। बस उस पवित्र स्थल पर होना और गंगा में पवित्र डुबकी लगाना आध्यात्मिक रूप से आत्मा को प्रबुद्ध कर सकता है, जिससे शारीरिक और मानसिक तनाव कम हो सकता है।

ज्योतिष — यह उत्सव तब होता है जब सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति कुछ निश्चित स्थितियों में होते हैं। **नदी संगम** — यह आयोजन नदी संगम पर होता है, जहाँ सौर चक्र में विशिष्ट अवधियों में अद्वितीय शक्तियाँ कार्य करती हैं। **जल** : माना जाता है कि यह आयोजन जलमार्गों के ऊर्जा मंथन से जुड़कर शरीर (72 प्रतिशत जल) को लाभ पहुँचाता है। महाकुंभ मेला पूरे भारत से लोगों का एक विशाल जमावड़ा है, जो पवित्र गंगा नदी में स्नान करने के लिए आते हैं। यह आयोजन ज्ञान से भरा हुआ है और इसमें कई अनुष्ठान और साँस्कृतिक गतिविधियाँ शामिल हैं। कुंभ मेला न केवल दुनियाँ का सबसे बड़ा मानव समागम है, बल्कि आध्यात्मिक रूप से सबसे गहरा भी है, जो दुनियाँ भर से लाखों भक्तों, संतों और साधकों को आकर्षित करता है। प्रयागराज में अगला कुंभ मेला 2025 लोगों के लिए अपने आध्यात्मिक सार से फिर से जुड़ने, अपनी आत्मा को शुद्ध करने और सहस्राब्दियों से चली आ रही पवित्र यात्रा पर निकलने का एक अनूठा अवसर है। संक्षेप में कई ग्रहों की स्थिति का हमारे ग्रह के जल और वायु पर प्रभाव पड़ता है। कुछ ग्रहों की स्थिति में, एक विशिष्ट समय के दौरान एक विशिष्ट स्थान के सकारात्मक ऊर्जा स्तर उच्च हो जाते हैं, जो आध्यात्मिक विकास और जागृति के लिए एक आदर्श वातावरण बनाते हैं।

कुंभ मेले का आर्थिक महत्व — प्रधानमंत्री ने हाल ही में महाकुंभ 2025 की तैयारी के लिए उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में कुल ₹5,500 करोड़ की 167 विकास परियोजनाओं का अनावरण

किया। 11 भारतीय भाषाओं में श्रद्धालुओं की मदद के लिए बहुभाषी एआई–संचालित चोटबॉट, सहायक को पेश किया गया। लगभग 4,000 हेक्टेयर में फैले महाकुंभ में 40–45 करोड़ तीर्थयात्रियों के आने की उम्मीद है, जिससे यह दुनियाँ का सबसे बड़ा धार्मिक समागम बन जाएगा। उत्तर प्रदेश सरकार के आर्थिक सलाहकार के. वी. राजू का दावा है कि अनुमानित 45 करोड़ तीर्थयात्रियों के साथ, महाकुंभ से कम से कम 2 लाख करोड़ रुपये की आय हो सकती है।

मुख्यमंत्री को सलाह देने वाले पूर्व आईएएस अधिकारी अवनीश अवस्थी ने अनुमान लगाया कि यदि प्रत्येक तीर्थयात्री 8,000 रुपये खर्च करता है, तो कुल आर्थिक गतिविधि 3.2 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो सकती है, जो इस आयोजन के विशाल वित्तीय महत्व को दर्शाता है। वरिष्ठ पर्यटन विशेषज्ञों का मानना है कि मेले के बुनियादी ढ़ांचे और संपूर्ण विश्व से आने वाले कई यात्री वर्षों तक पर्यटन को लाभ पहुँचायेंगे। उन्नत सुविधाएँ और कनेक्टिविटी क्षेत्र पर स्थायी प्रभाव डालेगी। सीआईआई की एक पुरानी रिपोर्ट के अनुसार 2013 में हुए महाकुंभ से कुल 12,000 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ था, जिसमें हवाई अड्डों और होटलों के बुनियादी ढ़ांचे में सुधार शामिल था, जबकि 2019 में कुंभ मेले से कुल 1.2 लाख करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ था। सीआईआई के अनुसार हालांकि कुंभ मेला आध्यात्मिक और धार्मिक प्रकृति का है, लेकिन इससे जुड़ी आर्थिक गतिविधियों ने 2019 में विभिन्न क्षेत्रों में छह लाख से अधिक लोगों को रोजगार दिया। योगी सरकार राज्य की पर्यटन अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए पर्याप्त प्रयास कर रही है, जिसमें आने वाला महाकुंभ इस पहल में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उम्मीद है कि इस शानदार आयोजन से संबंधित प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रोजगार की संभावनाओं से लगभग 45,000 परिवार लाभान्वित होंगे और विभिन्न क्षेत्रों में लाखों लोग लाभान्वित होंगे।

इतिहास की खोज : समय के साथ एक यात्रा – कुंभ मेला, एक हिंदू

तीर्थ मेला है, जो हर बारह साल में चार बार चार अलग–अलग स्थानों पर आयोजित किया जाता है – प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक। कुंभ मेला 2025 प्रयागराज में होगा, जहाँ पवित्र नदियाँ गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती संगम पर मिलती हैं। कुंभ मेले का इतिहास हजारों साल पुराना है, जिसका आरंभिक उल्लेख मौर्य और गुप्त काल (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ई.पू.) से मिलता है। प्रारंभिक मेले, हालाँकि वर्तमान कुंभ मेले जितनी बड़ी नहीं थीं, लेकिन भारतीय उपमहाद्वीप के सभी हिस्सों से तीर्थयात्रियों को आकर्षित करती थीं। हिंदुत्व के उदय के साथ मेले का महत्व बढ़ गया, गुप्त जैसे सम्राटों ने इसे एक प्रतिष्ठित धार्मिक सभा का दर्जा दिया।

मध्यकाल के दौरान कुंभ मेले को कई शाही राजवंशों द्वारा समर्थन दिया गया था, विशेष रूप से चोल और विजयनगर साम्राज्यों द्वारा। उन्नीसवीं सदी में, ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासक जेम्स प्रिंसेप जैसे लोगों ने कुंभ मेले का दस्तावेजीकरण किया, जिसमें इसके अनुष्ठानिक अनुष्ठानों, विशाल सभाओं और सामाजिक–धार्मिक गतिशीलता का उल्लेख किया गया। इन साक्ष्यों ने समय के साथ कुंभ के विकास और स्थायित्व के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। स्वतंत्रता के बाद महाकुंभ मेले का महत्व और भी बढ़ गया, जो राष्ट्रीय एकता और भारत की समृद्ध साँस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करता है। 2017 में यूनेस्को द्वारा मानव जाति की अमूर्त साँस्कृतिक संपत्ति के रूप में मान्यता प्राप्त कुंभ मेला आधुनिकता के सामने पारंपरिक परंपराओं के अस्तित्व और अनुकूलन का गवाह है।

विविधता में एकता – महाकुंभ कई जातियों, पंथों और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से लाखों लोगों को एक साथ लाता है, जिससे सामाजिक सद्भाव और साँस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा मिलता है। 2025 में महाकुंभ मेला सिर्फ एक मेले से कहीं ज्यादा है, यह खुद की ओर एक यात्रा है। अनुष्ठानों और प्रतीकात्मक कर्मों से परे, यह तीर्थयात्रियों को आंतरिक विचारों में संलग्न होने और पवित्रता के साथ अपने संबंध को गहरा करने का अवसर देता है। आधुनिक जीवन की माँगों से भरी दुनियाँ में, महाकुंभ मेला एकजुटता, पवित्रता और ज्ञान के प्रतीक के रूप में सामने आता है। यह शाश्वत यात्रा एक मजबूत अनुस्मारक के रूप में कार्य करती है कि मानवता के विविध मार्गों के बावजूद, हम मौलिक रूप से एकजुट हैं – शांति, आत्म–साक्षात्कार और पवित्रता के लिए एक अटूट सम्मान की एक आम खोज।

निष्कर्ष

सनातन धर्म में प्रत्येक आध्यात्मिक या धार्मिक गतिविधि का मानव और सामाजिक उत्थान से एक मजबूत संबंध है, जो सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देता है और साथ ही हमें यह भी याद दिलाता है कि सनातन धर्म जातिगत भेदभाव में विश्वास नहीं करता है, जिससे लाखों लोगों को आर्थिक रूप से बढ़ावा मिलता है। महाकुंभ मेला 2025 में न केवल आध्यात्मिक जीवन को समृद्ध करने की क्षमता है, बल्कि उत्तर प्रदेश में दीर्घकालिक आर्थिक विकास को भी गति देने की क्षमता है। अपने विशाल आकार और इससे पैदा होने वाली नौकरियों के साथ इस आयोजन का उद्देश्य एक स्थायी विरासत छोड़ना है, जो राज्य को वैश्विक आर्थिक केंद्र में बदल देगा। इस आयोजन का आर्थिक प्रभाव न केवल तात्कालिक है, बल्कि यह कई वर्षों तक क्षेत्र में पर्यटन, बुनियादी ढ़ांचे और रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करता रहेगा।

pankajjayswal1977@gmail.com

इलाबास से इलाहाबाद और अब पुन: प्रयागराज

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

गंगा, यमुना और सरस्वती नदी का पवित्र संगम तीर्थराज प्रयाग का एक नाम इलाबास भी था, जो मनु की पुत्री इला के नाम पर था। प्रयाग के निकट झूंसी या प्रतिष्ठानपुर में चन्द्रवंशी राजाओं की राजधानी थी। इसका पहला राजा इला और बुध का पुत्र पुरुरवा ऐल हुआ। उसी ने अपनी राजधानी को इलाबास की संज्ञा दी, जिसका नाम रूपांतरण अकबर के समय में इलाहाबाद हो गया। यह स्थान सामरिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। सातवीं शताब्दी में सम्राट हर्षवर्धन यहाँ पाँच–पाँच वर्षों के अन्तराल पर सत्र आयोजन किया करते थे। ऐसे एक सत्र में चीनी यात्री ह्वेनत्सांग 643 ई. में भाग लिया था।

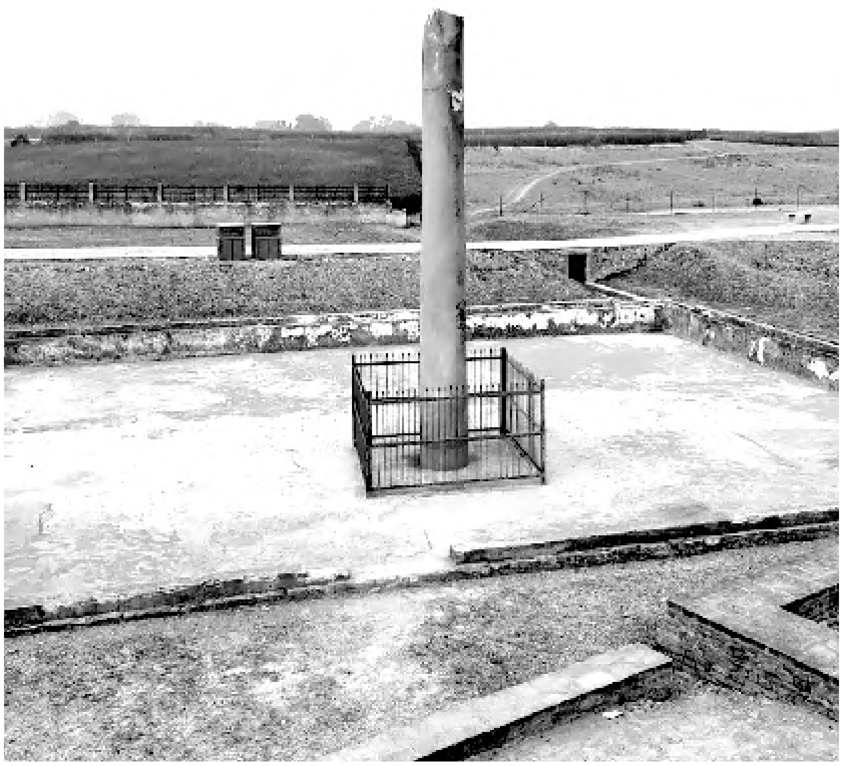

प्रतिष्ठानपुर

प्रयाग के निकट गंगा के दूसरे तट पर स्थित झूंसी ही प्राचीन प्रतिष्ठानपुर है। महाभारत में सब तीर्थों की यात्रा को प्रतिष्ठान (प्रतिष्ठानपुर) में प्रतिष्ठित माना गया है–"एवमेव महाभाग प्रतिष्ठाने प्रतिष्ठिता, तीर्थ यात्रा महापुण्या सर्वपापप्रमोचनी" वनपर्व– 85,114।

वनपर्व– 85,76 में प्रयाग के साथ ही प्रतिष्ठान का उल्लेख है– "प्रयागं सप्रतिष्ठानं कंबलाश्वतरौ तथा"।

झूंसी (जिला प्रयागराज)

प्रयाग में गंगा के दूसरे तट पर अतिप्राचीन स्थान है। इसका पूर्व नाम प्रतिष्ठान या प्रतिष्ठानपुर था। प्रतिष्ठान का तीर्थ के रूप में उल्लेख महाभारत में है – "एवमेव महाभाग प्रतिष्ठाने प्रतिष्ठिता" – वनपर्व 85,114. यहाँ चंद्रवंशी राजाओं की राजधानी थी। पुराणों के अनुसार चंद्रवंश में पुरुरवा ऐल प्रथम राजा हुए, जो मनु की पुत्री इला के पुत्र थे। (इलाहाबाद का प्राचीन नाम इलाबास था, जिसे अकबर ने इलाहाबाद कर दिया था) इनके वंशज ययाति के पांच पुत्रों में से पुरु ने प्रतिष्ठानपुर और उसके समीपवर्ती प्रदेश पर सर्वप्रथम अपना शासन स्थापित किया था। झूंसी में प्रागैतिहासिक काल की कई गुफ़ाएँ भी हैं। प्राचीनकाल के खंडहर दो ढूहों के रूप में झूंसी रेलवे स्टेशन से एक मील दक्षिण–पश्चिम की ओर अवस्थित है। एक ढूह के ऊपर समुद्रकूप नामक एक प्रसिद्ध प्राचीन कूप है।

प्रयाग (उत्तरप्रदेश)

गंगा–यमुना के संगम पर बसा हुआ प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ । प्राचीन साहित्य में केवल गंगा–यमुना, इन्हीं दो नदियों का संगम प्रयाग में माना गया है। त्रिवेणी में गंगा यमुना दृश्य है, जबकि सरस्वती अदृश्य है। जिस प्रकार महिलाओं के वेणी में तीन हिस्सों को गुंथने पर दो ही धाराएँ दृश्यमान होती हैं, वैसे ही यहाँ सरस्वती देवमार्गी होने से अदृश्य रहती है।

रामायण में प्रयाग

वाल्मीकि रामायण, महाभारत, प्राचीन पुराणों तथा कालिदास के ग्रंथों में सर्वत्र प्रयाग में गंगा–यमुना के ही संगम का वर्णन है। वाल्मीकि रामायण में प्रयाग का उल्लेख भारद्वाज के आश्रम के संबंध में है और इस स्थान पर घोर वन की स्थिति बताई गई है–

"यत्र भागीरथी गंगां यमुनाभिप्रवर्तते जग्मुस्तं देशमुद्दिश्य विगाह्य समुहद्वनम्। प्रयागमभितः पश्च सौमित्रे धूममुत्तमम्, अग्रेर्भगवतः केतुं मन्ये संनिहितो मुनिः। धन्विनौ तौ सुखं गत्वा लंबमाने दिवाकरे, गंगायमुनयोः संधी प्रापतुर्निलयं मुनेः। अवकाशो विविक्तो यं महानद्योः समागमे, पुण्यश्चरमणीयश्च वसत्विह भवान् सुखम्" –वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड–54, 2 – 5–8–22। इस वर्णन से सूचित होता है कि प्रयाग में रामायण की कथा के समय घोर जंगल तथा मुनियों के

आश्रम थे, कोई जनसंकुल बस्ती नहीं थी।

महाभारत में प्रयाग

महाभारत में गंगा–यमुना के संगम का उल्लेख तीर्थ रूप में अवश्य है, किंतु उस समय भी यहाँ किसी नगर की स्थिति का आभास नहीं मिलता– "पवित्रमृपिभिर्जुष्टं पुण्यं पावनमुत्तमम्, गंगायमुनयोर्वीर संगमं लोक विश्रुतम्" वनपर्व– 87,18। "गंगा यमुनयोर्मध्ये स्नाति यः संगमेनरः, दशाश्वमेधा–नाप्नोति कुलं चैव समुद्धरेत्" वनपर्व–84,35। "प्रयागे देवयजने देवानां पृथिवीपते, अयुराप्लुत्य गात्राणि तपश्चातस्थुरुत्तमम्, गंगायमुनयो चैव संगमे सत्यसंगराः" वनपर्व– 95,4–5।

बौद्ध साहित्य में प्रयाग

बौद्ध साहित्य में भी प्रयाग का किसी बड़े नगर के रूप में वर्णन नहीं मिलता; वरन् बौद्धकाल में वत्सदेश की राजधानी के रूप में कौशांबी अधिक प्रसिद्ध थी। अशोक ने अपना प्रसिद्ध प्रयाग–स्तंभ कौशांबी में ही स्थापित किया था। यद्यपि बाद में शायद अकबर के समय में वह प्रयाग ले आया गया था। इसी स्तंभ पर समुद्रगुप्त की प्रसिद्ध प्रयाग–प्रशस्ति अंकित है।

कालिदास का मुक्तिदायक प्रयाग

कालिदास ने रघुवंश के 13वें सर्ग में गंगा–यमुना के संगम का मनोहारी वर्णन किया है (श्लोक 54 से 57 तक) तथा गंगा यमुना के संगम के स्नान को मुक्तिदायक माना है–"समुद्र–पत्न्योर्जलसन्निपाते पूतात्मनामत्र किलाभिषेकात्, तत्त्वावबोधेन विनापि भूयः तनुस्त्यजां नास्ति शरीरबंधः" रघु० 13,58।

विष्णुपुराण में प्रयाग

विष्णुपुराण में, प्रयाग में गुप्तनरेशों का शासन बतलाया गया है– "उत्साद्याखिलक्षत्रजातिं नवनागाः पद्मावत्यां नाम पुर्यामनुगंगाप्रयागं गयायाश्च मागधा गुप्ताश्च भोक्ष्यन्ति"। विष्णु० –6,8,29 से सूचित होता है कि प्रयाग की तीर्थ रूप में बहुत मान्यता थी–"प्रयागे पुष्करे चैव कुरुक्षेत्रे तथार्णवे कृतोपवासः प्राप्नोति तदस्य श्रवणान्नरः।

ह्वेवेनत्सांग का प्रयाग वर्णन

युवानच्वांग ने कन्नौजाधिप महाराज हर्ष का प्रति पांचवें वर्ष प्रयाग के मेले में जाकर सर्वस्व दान कर देने का अपूर्व वर्णन किया है। कहा है कि महाराज प्रत्येक कुम्भ और अर्द्धकुम्भ में अपना सम्पूर्ण राजकोष दान कर देते थे, अपना मुकुट, स्वर्ण और अपने वस्त्र भी। अपनी बड़ी बहन से कपड़े मांगकर, वही पहनकर, वापस अपनी राजधानी जाते थे।

अक्षयवट

उत्तरकालीन पुराणों में प्रयाग के जिस अक्षयवट का उल्लेख है, उसे बहुत समय तक संगम के निकट अकबर के किले के अंदर स्थित बताया जाता था। यह बात अब ग़लत सिद्ध हो चुकी है और असली वट–वृक्ष क़िले से कुछ दूर पर स्थित बताया जाता है। महाभारत में एक अक्षयवट का गया में होना भी वर्णित है– (वनपर्व– 84,83)। अक्षयवट सेना के कैंटोनमेंट में बताया जाता है।

इलाबास और इलाहाबाद

कहा जाता है कि अकबर के समय में प्रयाग का नाम इलाहाबाद कर दिया गया था, किंतु प्रयाग को अकबर के पूर्व भी इलाबास कहा जाता था। पुराणों के अनुसार प्रतिष्ठानपुर अथवा झूंसी (जो प्रयाग के निकट गंगा के उस पार है) में चंद्रवंशी राजा पुरु की राजधानी थी। इनके पूर्वज पुरुरवा थे, जो मनु की पुत्री इला और बुध के पुत्र थे (वाल्मीकि० उत्तरकाण्ड–89)। इला के नाम पर ही प्रयाग को इलाबास कहा जाता था। वास्तव में अकबर ने इसी नाम को थोड़ा बदलकर इलाहाबाद कर दिया था। वत्स या कोशांबी का राजा उदयन जो प्राचीन साहित्य में प्रसिद्ध है, चंद्रवंश से ही संबंधित था– इससे भी प्रयाग में चंद्रवंश के राज्य करने की पौराणिक कथा की पुष्टि होती है और इस तथ्य का भी प्रमाण मिल जाता है कि वास्तव में प्रयाग का एक प्राचीन नाम इलाबास भी था, जिसे अकबर ने बदल दिया था।

संगम का किला प्राचीन है

अकबर ने संगम पर स्थित किसी पूर्वयुगीन किले का जीर्णोद्धार करके उसका विस्तार करवाया और उसे बर्तमान सुदृढ़ किले का रूप दिया । इस तथ्य की पुष्टि तुलसीदास के इस वर्णन से भी होती है, जिसमें प्रयाग में एक सुदृढ़ गढ़ का वर्णन है––"क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा, सपनेहुं नहिं प्रतिपच्छहिं पावा" (रामचरितमानस, अयोध्या कांड)। अकबर के समकालीन इतिहास लेखक बदायूंनी के वृत्तांत से सूचित होता है, इस मुगल सम्राट् ने प्रयाग में एक बड़े राजप्रासाद की भी नींव रखी और नगर का नाम इलाहाबाद कर दिया।

अकबर, जहांगीर और खुसरो

अकबर ने प्रयाग की स्थिति की महत्ता को समझते हुए उसे अपने साम्राज्य के 12 सूबों में से एक का मुख्य स्थान भी बनाया। इसमें कड़ा और जौनपुर के प्रदेश भी सम्मिलित कर दिए गए थे। कहा जाता है कि अशोक का कौशांबी–स्तंभ इसी समय प्रयाग लाया गया था। अशोक और समुद्रगुप्त के प्रसिद्ध अभिलेखों के अतिरिक्त इस पर जहांगीर और बीरबल के लेख भी अंकित हैं। बीरबल का लेख उनकी प्रयाग–यात्रा का स्मारक है– "संवत् 1632 शाके 1493 मार्गवदी 5 सोमवार गंगादाससुत महाराज बीरबल श्री तीरथ राज प्रयाग को यात्रा सुफल लिखितम्"। खुसरो बाग जहांगीर के समय में बना था। यह बाग चौकोर है और इसका क्षेत्रफल 64 एकड़ है। इसमें अनेक मकबरे हैं। पूर्व की ओर गुंबद वाला मक़बरा जहांगीर के विद्रोही पुत्र खुसरो का है। इसे 1662 ई. में जहांगीर ने बगावत करने के फलस्वरूप मृत्यु की सजा दी थी। इलाहाबाद के चौक में अभी कुछ समय तक वे नीम के पेड़ खड़े थे, जिन पर अँग्रेजों ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में लड़ने वाले भारतीय वीरों को फांसी दी थी।

यमुना में गंगा का मिलन

त्रिपथगा गंगा, यमुना और सरस्वती की त्रिवेणी संगम के पश्चात नदी का नाम गंगा रह जाता है और यमुना–सरस्वती विलिन हो जाती है, किन्तु शास्त्र कहते हैं कि यहाँ गंगा और सरस्वती यमुना में मिलती हैं। यमुना के पास यहाँ जलराशी अधिक होती है। संगम में समागम के पश्चात गंगा आग्नेय कोण में मुड़ जाती है। संगम के उपरान्त गंगा के अग्नीकोण में मुड़ने के कारण ही इस संगम को मोक्षदायिणी कहा जाता है। यह वस्तुतः मोक्षभूमि है, और इसी कारण यहाँ प्रतिवर्ष माघ मास में कल्पवास के लिए लोग आते हैं।

murari.shukla@gmail.com

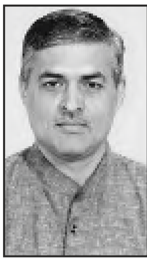

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 साल

विजय कुमार

उपेक्षा से समर्पण तक

एक विद्वान के अनुसार हर सँस्था या संगठन को अपने जीवन में चार प्रमुख सीढ़ियों से होकर गुजरना पड़ता है। ये हैं उपेक्षा, विरोध, समर्थन और समर्पण। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सौ वर्षीय यात्रा भी इसका अपवाद नहीं है। संघ की स्थापना विजयादशमी (27 सितम्बर, 1925) को नागपुर में हुई। इसके संस्थापक थे डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार। उन्होंने मेडिकल की पढ़ाई के दौरान कोलकाता में क्रांतिकारी सँस्था 'अनुशीलन समिति' के साथ काम किया। पढ़ाई पूरी कर वे नागपुर आ गये और काँग्रेस में शामिल हो गये; पर दोनों जगह उन्हें पूर्ण संतुष्टि नहीं मिली। अतः उन्होंने संघ की स्थापना की।

संघ की सबसे बड़ी विशेषता उसकी कार्यपद्धति थी। बाकी सँस्थाएँ धरने, प्रदर्शन, वार्षिकोत्सव, आंदोलन.. आदि के माध्यम से काम करती थीं; पर संघ का आधार एक घंटे की शाखा थी। शुरू में डॉ. हेडगेवार ने बड़ों से संपर्क कर, उन्हें जोड़ने का प्रयास किया; पर उनसे उचित सहयोग नहीं मिला। अतः वे बच्चों को साथ लेकर शाखा लगाने लगे। इसी में से फिर संघ का विकास हुआ। लेकिन यहीं से संघ की उपेक्षा का दौर भी शुरू हुआ। लोग डॉ. हेडगेवार का मजाक बनाने लगे। कुछ कहते थे कि जिन बच्चों को अपनी नाक पोंछनी नहीं आती, जो अपने कच्छे का नाड़ा खुद नहीं बांध सकते, उनके बल पर डॉ. हेडगेवार हिन्दू राष्ट्र की स्थापना करेंगे। उनको साथ लेकर वे देश को स्वाधीनता दिलाएंगे। कुछ ने डॉ. हेडगेवार के नाम की व्याख्या करते हुए, उन्हें 'हैड ऑफ दि गंवार' बता दिया। डॉ. हेडगेवार का जन्म चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (1.4.1889) को हुआ था। कई लोग कहते थे कि जिसका जन्म ही 'मूर्ख दिवस' पर हुआ है, उससे समझदारी की आशा करना व्यर्थ है। कुछ लोग 40 वर्षीय डॉ. हेडगेवार को बच्चों के साथ खेलते देख, उन्हें पागल मानने लगे थे।

जब संघ की दो–चार शाखा चल निकलीं, तो पहली बार पथ संचलन का आयोजन हुआ। उसमें लगभग 50 सँख्या थी। नागपुर वालों ने हजारों सँख्या के जुलूस देखे थे। उनमें लोग झंडे, बैनर आदि लेकर नारे लगाते हुए चलते थे; पर इस संचलन में ऐसा कुछ नहीं था। अतः इसे उपेक्षा से देखा गया; पर डॉ. हेडगेवार शांत भाव से अपने काम में लगे रहे। लेकिन यह उपेक्षा का दौर अधिक नहीं चला। चूंकि संघ कार्य की जड़ें मजबूत हो रही थीं। पहले केवल नागपुर में और फिर निकटवर्ती विदर्भ क्षेत्र में शाखाएँ खुल गयीं। समाज के प्रभावी लोग संघ से जुड़ने लगे। कई जगह काँग्रेस के बड़े नेता भी संघ में आते थे। अतः उनके शीर्ष नेताओं के कान खड़े होने लगे। संघ में खुलकर हिन्दू राष्ट्र और हिन्दू संगठन की बात कही जाती थी; पर काँग्रेस वाले धर्मनिरपेक्षता के नाम पर मुस्लिम तुष्टीकरण के समर्थक थे। इससे वहाँ संघ का विरोध होने लगा। अतः कई नेताओं ने संघ को छोड़ा, तो कई ने काँग्रेस को ही अलविदा कह दिया। दूसरी ओर संघ की गतिविधियाँ देखकर शासन–प्रशासन भी चौकन्ना हो रहा था। स्वयंसेवक अपनी प्रतिज्ञा में देश की स्वाधीनता की बात कहते थे। अतः अँग्रेजों को लगा कि ऊपरी ढांचा भले ही खेलकूद का हो; पर डॉ. हेडगेवार किसी गुप्त योजना पर काम कर रहे हैं। उनकी पृष्ठभूमि क्रांतिकारियों के साथ काम की थी ही। कई पुराने साथी भी उनसे मिलने आते रहते थे। अतः उनके पीछे गुप्तचर लगा दिये गये। यद्यपि डॉ. हेडगेवार की सावधानी के कारण उनके हाथ कभी कुछ नहीं लगा।

15 दिसम्बर, 1932 को मध्य प्रांत शासन ने शाखा में सरकारी कर्मचारियों के जाने पर प्रतिबंध लगा दिया; पर कई बड़े नेताओं और समाजसेवियों द्वारा संघ की प्रशंसा तथा विधानसभा में हुई रोचक बहस से यह मजाक का विषय बन गया। पाँच अगस्त, 1940 को केन्द्र शासन ने भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत संघ की सैनिक वेशभूषा तथा प्रशिक्षण पर प्रतिबंध लगाया। उन दिनों संघ का काम मुख्यतः मध्यभारत में ही था; पर वहाँ की सरकार ने प्रतिबंध लागू करने से मना कर दिया।

1940 में डॉ. हेडगेवार के देहांत के बाद श्री गुरुजी (माधव सदाशिव गोलवलकर) सरसंघचालक बने। देश के विभाजन के समय पंजाब और सिंध में हिन्दुओं की रक्षा में संघ की जो भूमिका रही, उससे लोग संघ और गुरुजी को पूजने लगे। उन दिनों संघ के कार्यक्रमों में लाखों लोग आते थे। इससे नेहरू जी की नींद उड़ गयी। उन्हें लगा कि संघ वाले मेरी कुरसी छीन लेंगे। अतः 1948 में गाँधी जी की हत्या का झूठा आरोप लगाकर संघ पर प्रतिबंध लगाया गया। संघ ने नेहरू जी को समझाने का प्रयास किया; पर इससे काम नहीं चला। अतः संघ ने सत्याग्रह किया और सरकार को झुका दिया। विरोध का यह क्रम इंदिरा गाँधी के समय में भी जारी रहा। 1975 में अपनी सत्ता बचाने और अपने पुत्र संजय गाँधी को राजनीति में स्थापित करने के लिए देश में आपातकाल लगाया। इसकी चपेट में संघ भी आ गया। एक बार फिर वार्ता और सत्याग्रह का मार्ग अपनाया गया। अंततः शासन को झुकना पड़ा।

1992 में बाबरी ढांचे के ध्वंस के बाद एक बार फिर प्रतिबंध लगा; पर इसे न्यायालय ने ही हटा दिया। इन प्रतिबंधों से संघ की प्रतिष्ठा बढ़ी और काम का विस्तार हुआ। यद्यपि आज भी अनेक राजनेता संघ को गाली देते रहते हैं; पर इससे संघ को कोई फरक नहीं पड़ता। घोर उपेक्षा और हिंसक विरोध की प्रक्रिया में से निकलते हुए स्वयंसेवकों ने समाज के सभी क्षेत्रों में सैकड़ों संगठन और सँस्थाएँ बनायीं। अतः पुरुष, स्त्री, बच्चे, बूढ़े, मजदूर, किसान, वकील, अध्यापक, डॉक्टर, वनवासी, व्यापारी, विद्यार्थी आदि करोड़ों लोग संघ से जुड़ गये। संघ विचार की प्रायः सभी सँस्थाएँ आज अपने क्षेत्र में शीर्ष पर हैं। अतः अब संघ के विरोध की बजाय समर्थन की लहर चल पड़ी है।

इसका प्रभाव राजनीतिक क्षेत्र में भी पड़ा है। वहाँ संघ के विचारों की प्रतिनिधि भारतीय जनता पार्टी है। अधिकांश स्वयंसेवक उसे ही वोट देते हैं। किसी समय भा.ज.पा को एक विशेष वर्ग और क्षेत्र की पार्टी माना जाता था; पर अब उसे पूरे देश में वोट मिलते हैं। केरल और तमिलनाडु जैसे राज्य, जहाँ वह कभी सत्ता में नहीं रही, वहाँ भी उसके वोट लगातार बढ़ रहे हैं। काँग्रेस और वामपंथियों के अलावा शायद ही कोई राजनीतिक दल हो, जिसने भा.ज.पा. के साथ केन्द्र या राज्य की सत्ता में सहभाग न किया हो। भा.ज.पा को गाली देने वाले नेता आज नरेन्द्र मोदी से मिलने और उनके आशीर्वाद के लिए लाइन में लगे रहते हैं। अर्थात संघ विरोधी अब समर्पण की मुद्रा में हैं। संघ की सौ वर्षीय यात्रा की यह एक बड़ी उपलब्धि है।

विचार, कार्यक्रम और कार्यकर्ता का संगम

दुनियाँ में लाखों सामाजिक सँस्थाएँ हर साल बनती हैं। इनका जीवन दो–चार साल से लेकर दो–चार सौ साल तक का होता है। अधिकांश सँस्थाएँ अपने सँस्थापकों की मृत्यु के बाद चमक खो देती हैं। कुछ सँस्थापकों के बच्चों में बँट जाती हैं। कुछ भवन और कोष के मुकदमों में पड़कर चलती जैसी दिखाई देती हैं; पर काम के नाम पर वहाँ कुछ नहीं होता। कुछ सँस्थाएँ केवल देशी और विदेशी चंदे के लिए ही बनती हैं। ऐसी सँस्थाएँ, संगठन, न्यास, फाउंडेशन आदि हर शहर में हजारों होते हैं, जिनका नाम अखबारों में भी छपने से उनके जीवित रहने का पता लगता है।

दूसरी ओर संघ का नाम और काम लगातार बढ़ रहा है। 2024 की विजयादशमी से संघ अपने जन्मशती वर्ष में प्रवेश कर गया है। संभवतः अगले वर्ष कुछ विशेष कार्यक्रम भी होंगे; पर यहाँ यह जानना रुचिकर है कि एक सँस्था और संगठन के रूप में संघ की इस एकता और वृद्धि का रहस्य क्या है?

किसी भी सामाजिक सँस्था की वृद्धि के तीन महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। इन्हें हम रिक्शा के तीन पहिए मान सकते हैं। अगला पहिया रिक्शा को दिशा, तो शेष दो उसे गति देते हैं। संघ के हिसाब से विचार, कार्यक्रम और कार्यकर्ता ये तीन पहिये हैं। इनमें उचित समन्वय के चलते ही संघ आज इतनी प्रगति कर सका है।

विचार : इसे हम संगठन का उद्देश्य या प्राण भी कह सकते हैं। संघ के सँस्थापक डॉ. हेडगेवार प्रायः कहते थे कि भारत हिन्दू राष्ट्र है; संगठन में शक्ति है तथा शक्ति से सब संभव है। संघ की स्थापना के समय आजादी का आंदोलन चल रहा था। डॉ. हेडगेवार स्वयं दो बार जेल गये। उन्होंने देखा कि काँग्रेसी नेताओं के पास भाषण तो हैं; पर आजादी के बाद देश कैसे चलेगा, इसका कोई विचार नहीं है। उनके लिए आजादी ही अंतिम लक्ष्य था और इसके लिए वे मुस्लिम तुष्टीकरण की घातक राह पर चल रहे थे। दूसरी ओर डॉ. हेडगेवार मानते थे कि भारत मूलतः एक हिन्दू देश है। यहाँ का दुःख और सुख हिन्दुओं से जुड़ा है। देश की उन्नति से हिन्दू खुश होता है और अवनति से दुःखी। यद्यपि हिन्दू की पहचान केवल पूजा विधि से नहीं होती। भारत को अपनी मातृ, पितृ, पुण्य और मोक्षभूमि मानने वाला हर व्यक्ति हिन्दू है, चाहे, उसकी उपासना विधि कुछ भी हो। डॉ. हेडगेवार के कई मुस्लिम मित्र भी थे, जो इन विचारों से सहमत थे। संगठन में शक्ति की बात सर्वविदित है। पंचतंत्र में किसान के चार बेटों की कथा; झाडू और तिनकों की कथा, कबूतरों का जाल सहित उड़ने वाली कथाएँ प्रसिद्ध हैं। ततैये, बंदर या फिर कौओं के झुंड के हमले से बड़े से बड़े पहलवान को भी भागना पड़ता है।

शक्ति का महत्व भी जग जाहिर है। शक्ति अच्छे लोगों की हो या गुंडों की; पर उससे प्रभावित तो सब होते ही हैं। यदि कहीं सफाइकर्मी, रिक्शाचालक या फल–सब्जी वाले हड़ताल कर दें; तो जनजीवन ठप्प हो जाता है। डॉ. हेडगेवार कहते थे कि समाज में अच्छे लोग अधिक हैं; पर वे बिखरे हैं। जबकि खराब लोग कम होने पर भी संगठित होते हैं। इसलिए वे हावी हो जाते हैं। डॉ. हेडगेवार ने सज्जन शक्ति को संगठित किया। वे कहते थे कि जैसे स्वस्थ रहना व्यक्ति की जरूरत है। ऐसे ही संगठन

को भी देश और समाज की जरूरत है। संघ की स्थापना किसी के विरोध में नहीं, बल्कि देश की इस जरूरत को पूरा करने के लिए हुई।

कार्यक्रम : हर सँस्था अपने उद्देश्य के अनुरूप धरना, प्रदर्शन, कथा, प्रवचन, पूजा, प्रतियोगिता, सेवा आदि कार्यक्रम अपनाती है। डॉ. हेडगेवार युवाओं में अनुशासन और देशभक्ति के सँस्कार भरना चाहते थे। इसलिए उन्होंने एक घंटे की शाखा पद्धति का आविष्कार किया। यह स्वयं में अनोखी थी। इसलिए लोगों ने शुरू में मजाक बनाया; पर इससे जो स्वयंसेवक और कार्यकर्ता बने, उन्होंने ही देश और विदेश में संघ का काम फैलाया है। वे केवल संघ ही नहीं, सैकड़ों समविचारी सँस्थाएँ चला रहे हैं, जिसका प्रभाव सब ओर दिख रहा है। शाखा में खेलकूद, समता, आसन, नियुद्ध और लाठी संचालन जैसे शारीरिक कार्यक्रम तथा गीत, चर्चा, कहानी, प्रश्नोत्तर आदि बौद्धिक कार्यक्रम होते हैं। कुछ शाखाओं में विद्यार्थी आते हैं, तो कुछ में बड़े। विद्यार्थी शाखा में खेलकूद अधिक होते हैं, तो बड़ों की शाखा में आसन और प्राणायाम आदि। इसके साथ ही सहभोज, वन विहार, शिविर, प्रशिक्षण वर्ग आदि से स्वयंसेवक के मन में देश, धर्म और समाज के प्रति प्रेम के संस्कार पड़ते हैं; जो आजीवन उसके साथ रहते हैं। इसीलिए किसी घटना पर स्वयंसेवकों का व्यवहार एक जैसा दिखता है। अब सामाजिक समरसता, गोसेवा, पर्यावरण, परिवार प्रबोधन आदि नये आयाम संघ में जोड़े गये हैं। इनमें पुरुषों के साथ महिलाएँ भी काम करती हैं।

कार्यकर्ता : किसी भी सँस्था का तीसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ उसका कार्यकर्ता है। संघ का सौभाग्य है कि उसे शुरू से ही समर्पित कार्यकर्ता मिले। डॉ. हेडगेवार ने अविवाहित रहते हुए पूरा समय इसमें लगाया। अतः उन जैसे हजारों कार्यकर्ता तैयार हुए। इन्हें प्रचारक कहते हैं; पर इसके अलावा लाखों गृहस्थ कार्यकर्ता भी हैं, जो प्रतिदिन दो–चार घंटे संघ को देते हैं। अब तो अवकाश प्राप्त वानप्रस्थी कार्यकर्ता भी पर्याप्त मात्रा में हैं। अन्य सँस्थाओं में पदाधिकारी होते हैं, पर संघ में इसे जिम्मेदारी कहते हैं। अन्य जगह व्यक्ति कुरसी से चिपका रहता है, जबकि संघ में लगातार नये कार्यकर्ता बनते रहते हैं। इसलिए हर तीन–चार साल में नयी एवं युवा टीम बन जाती है। जिम्मेदारी बदलते समय कोई क्लेश भी नहीं होता। चूंकि पुराने कार्यकर्ता भी अपने स्वास्थ्य और रुचि के अनुसार काम करते रहते हैं और उन्हें पूरा सम्मान मिलता है। संघ में कार्यकर्ता समय के साथ धन भी देता है। किसी शिविर या प्रशिक्षण वर्ग में वह अपने किराये से जाता है और वहाँ भोजन का शुल्क भी भरता है। संघ कार्य के संचालन में जो धन लगता है, वह सभी स्वयंसेवक साल में एक बार होने वाले गुरुदक्षिणा कार्यक्रम में परम पवित्र भगवा ध्वज के सम्मुख अर्पित करते हैं।

प्रचारक को हर तीन–चार साल में दूसरी जगह भेज देते हैं। इससे उसे नये अनुभव मिलते हैं और उसकी योग्यता बढ़ती है। स्थानीय गृहस्थ कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारियाँ भी बदलती रहती हैं। संघ के काम की वृद्धि के ये तीन महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। इन्हें अपना कर कोई भी सँस्था आगे बढ़ सकती है। (क्रमशः...)

वैश्य समाज इस्लामिक जिहाद के आतंक से कब सतर्क होगा

दिव्य अग्रवाल (लेखक व विचारक)

बनवारी लाल गोयल जी की निर्मम हत्या, क्या वैश्य समाज की आँखें खोल पायी? सम्भल के जिस मुस्लिम समाज से बनवारी लाल जी, व्यापारिक और सामाजिक सम्बन्ध के साथ–साथ मधुर संबंध रखते थे, उसी मुस्लिम समाज ने बनवारी लाल जी को कई हिस्सों में काटकर दर्दनाक मृत्यु दी। इस वीभत्स हत्याकांड के उजागर होने पर आम जनमानस योगी सरकार की प्रशंसा तो कर रहे हैं, पर स्वयं क्या कर रहे हैं, इस पर भी विचार होना चाहिए। सम्भल में बनवारी लाल जी के अतिरिक्त सैकड़ों हिन्दुओं को जिन्दा जलाकर मार दिया गया, जिसका एक मात्र कारण मजहबी चरमपंथ था, लेकिन अब भी वैश्य समाज के अनेकों लोग इन्हीं मजहबी चरमपंथियों को अपने प्रतिष्ठानों में काम पर रखते हैं, उनसे कार्य करवाते हैं और बड़े गर्व से कहते हैं कि बाजार से दो रूपए कम में काम कर रहे हैं, हिन्दुओं से बढ़िया काम कर रहे हैं, चार बार बाउजी–बाउजी कहते हैं, हिन्दुओं के तो दिमाग खराब हैं, तो यह निश्चित है कि बनवारी लाल जी अंतिम व्यक्ति नहीं थे, जिनके साथ मजहबी जिहाद किया गया, उन सबका यही परिणाम होगा, जो अब भी धन लालच में सत्य को देखकर अनदेखी कर रहे हैं।

वैश्य समाज धर्म रक्षा हेतु पहले अखाड़ों का संचालन करता था, आर्थिक रूप से कमजोर हिन्दुओं की हरसम्भव मदद करता था, चाहे, वो मदद बच्चों के विवाह, शिक्षा, उपचार से या कानूनी रूप से संबंधित हो। पुलिस से लेकर न्यायालय तक हर प्रकार की सहायता उन लोगों की होती थी, जो धर्म के लिए लड़ते थे, लेकिन आज सब कुछ बिखर रहा है। अब भी समय है, जागरूक होइए, कठोर निर्णय लीजिये, भंडारे, भजन संध्या आदि करवाने के स्थान पर हिन्दुओं को संवैधानिक रूप से शस्त्र और शास्त्र से सशक्त करने हेतु योजना बनाइये।

(यह लेखक की नीती अभिव्यक्ति है, इससे विश्व हिन्दू परिषद का कोई सम्बन्ध नहीं है। हम जातियों के विरूद्ध नहीं, हिन्दूस्थान के पक्ष में काम करते हैं – सम्पादक, हिन्दू विश्व)

divyelekh@gmail.com

मंदिर केवल ईंट-पत्थरों की इमारतें नहीं
यह हमारी पहचान भी है

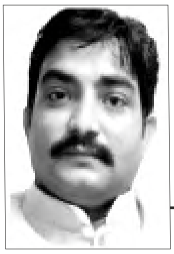

डॉ. प्रवेश कुमार

मुगलकाल में धार्मिक धर्मांधता के कारण मुगल शासकों ने हिंदुओं के बहुत से धार्मिक स्थलों पर कब्जा कर लिया था, जो हिदुओं के पवित्र आराधना के स्थल थे। इसमें से बहुत से लूट–पाट करके नष्ट कर दिए और बहुतों पर मस्जिद बना दी गईं। मंदिर केवल ईंट–पत्थरों की इमारतें नहीं, यह हमारी पहचान भी हैं। पिछले कई दिनों से भारत के राजनीतिक–सामाजिक चर्चा के केंद्र में हिन्दू मंदिर एवं मुस्लिम मस्जिद का मुद्दा कुछ ज्यादा ही उठाया जा रहा है। रोज कुछ मुस्लिम मौलवी या नेता टी.वी. चैनलों पर इतिहासकार के रूप में दिख रहे हैं, लेकिन एक बात बड़े मजे की है कि कुछ वर्ष पहले बने दत्तात्रेय गोत्र वाले काँग्रेस नेता इस पूरी चर्चा से गायब हैं। वहीं कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग ये कहते हुए आम दिख रहा है कि भारत में क्या मंदिर–मस्जिद का ही मुद्दा बचा है ? क्या शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार एवं सुरक्षा पर चर्चा नहीं होनी चाहिए ? जैसे प्रश्न आज बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा हिन्दू मन्दिरों के पुर्ननिर्माण को लेकर समाज में खड़े किए जा रहे, ऐसा ही तब भी हुआ, इस देश में देश को आजाद हुए कुछ ही वर्ष बीते थे और भारत के तमाम नेता गुजरात के सोमनाथ में भगवान शिव के मंदिर के पुर्ननिर्माण की बात कर रहे थे, जिसके अगुआ सरदार पटेल भले ही थे, लेकिन तमाम देश का जनमानस मंदिर निर्माण के पक्ष में ही था, लेकिन तब भी देश के खास बुद्धिजीवी वर्ग मंदिर निर्माण का विरोध ही कर रहे थे। इसमें अफसोस इस बात का था कि देश के प्रधानमंत्री नेहरू पर चढ़े वामपंथी प्रभाव ने उस समय भी सोमनाथ मंदिर निर्माण से उन्हें अलग रहने को विवश कर दिया था, जो आज भी काँग्रेस पर बदस्तूर जारी है।

इतना ही नहीं देश के राष्ट्रपति राजेंद्र बाबू न जा सकें, इसका सुझाव भी नेहरू जी उन्हें दे आए थे। तब भी काँग्रेस मंदिर निर्माण के मुद्दे को महत्व ना देकर अल्पसँख्यक तुष्टिकरण में ही व्यस्त थी, जो आज भी जारी है।

क्या कभी देश के लोगों ने सोचा कि देश का प्रधानमंत्री ये तो कह देता है कि देश के संसाधनों पर पहला अधिकार देश के मुस्लिम समाज का है ? लेकिन क्या हिदुओं के नाम पर एक भी शब्द बोला जा सकता है, मुस्लिम वर्ग की बात करते रहना तो सेक्युलर होने की निशानी है, लेकिन जैसे ही हिन्दू समाज के हित की बात कर दो, तो 'कम्युनल' के टैग से कोई नहीं बचा सकता है। इसीलिए वर्षों भारत में हिन्दू समाज ने ये जानते हुए कि इन बड़ी–बड़ी मस्जिदों के गर्त में भारत की अस्मिता हिंदू मन्दिरों को दफन किया गया है; लेकिन सरकारों के हिन्दू विरोधी जैसे दिखने वाले व्यवहार के कारण कभी आवाज नहीं उठाई, लेकिन 60 के दशक में हिंदू समाज के संतों द्वारा हिन्दू मन्दिरों की मुक्ति को लेकर एक जन आन्दोलन जरूर चला। ये वही दौर था, जब विश्व हिन्दू परिषद भी अपने अस्तित्व में आया। ये भी वही कालखण्ड था, जब संत समाज ने एक स्वर में अयोध्या में प्रभु राम जन्मभूमि मंदिर, काशी में भगवान शिव का देवालय एवं मथुरा में भगवान कृष्ण जन्म स्थान मुक्ति को लेकर एक जन अभियान का बिगुल फूंका। आखिरकर समाज में बहुत से लोगों के मन ये जरूर आता है कि मंदिर की ही बात इस वक्त क्यों उठाई जा रही है, जबकि देश में अन्य तमाम मुद्दों पर बात हो सकती है।

भारत के जनमानस को ये जान लेना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति के लिए उसकी अस्मिता उसके लिए बेहद जरूरी है। ये पहचान जहाँ व्यक्ति को किसी से भिन्न दिखाती है, तो वहीं उसके जैसे पहचान समूह के निर्माण में सहायक भी सिद्ध होती है। अस्मिता व्यक्ति को समाज में परिवर्तित करती है, एनी गौटमेन हो या केथवुडवर्ड या फिर वीर सावरकर एवं बाबा साहब अम्बेडकर सभी ने इस अस्मिता को महत्वपूर्ण माना है। आप स्वयं सोचें कि जब भारत में

मुस्लिम लुटेरे आए, तो उन्हें धन का ही लालच था। वो ले जाते या जब वो इस देश के शासक बन गए, तब भी यहाँ के संसाधनों का ही दोहन करते। ऐसा क्या था, जो वे हमारे मन्दिरों–मठों एवं हिंदू समाज को मुस्लिम मत में परिवर्तित करने में अपनी शक्ति को लगा रहे थे ?

मुस्लिम इतिहासकारों ने खुद लिखा है, तैमूर लंग अपनी जीवनी तुजुके तैमूरी में लिखता है कि मेरा हिंदुस्तान पर आक्रमण करने का उद्देश्य काफिरों के विरुद्ध धर्म युद्ध करना है तथा हिंदुओं की दौलत और मूल्यवान संपत्ति को लूटना है। तैमूर लिखता है कि हिंदू उसकी तलवार का भोजन है, मैंने घोषणा की है कि तमाम बंदी कत्ल कर दिया जाएँ तथा जो कोई भी लापरवाही करे, उसका भी कत्ल कर दिया जाए, यह इस्लाम के गाजियों को संदेश है। इतना ही नहीं इब्न असीर अपनी पुस्तक 'कामिल–ऊत–तवारीख' में लिखते हैं कि 'वाराणसी में काफिरों का जबरदस्त कत्लेआम हुआ। सभी पुरुषों को मार दिया गया, केवल स्त्रियों और बच्चों को इसलिए छोड़ दिया गया, ताकि उनको गुलाम बनाकर उनका व्यापार किया जा सके। सारनाथ के बौद्ध परिसर को ध्वस्त किया गया और तमाम बौद्ध भिक्षुओं को मार दिया गया।

डॉ. अम्बेडकर ने भी अपनी बहुर्चचित पुस्तक, 'पाकिस्तान का विभाजन' में मुहम्मद गजनी के इतिहासकार अल–उतबी के लेखन का संदर्भ देते हुए बताते हैं कि उतबी लिखता है 'उसने (गजनी) मूर्तियों को तोड़ा और इस्लाम की स्थापना की, उसने शहरों पर कब्जा किया, नापाक कमीनों (हिन्दू, गैर मुस्लिम) को मार डाला, मूर्तिपूजकों को तबाह किया और मुसलमानों को गौरवान्वित किया'। इसी प्रकार मुहम्मद गौरी के इतिहासकार हसन निजामी ने लिखा है कि–''उन्होंने (गौरी) अपनी तलवार से हिंद को बु की गंदगी से साफ किया और पाप से मुक्त किया तथा उस सारे मुल्क को बहुदेववाद के कंटक से स्वच्छ किया, मूर्तिपूजा की अपवित्रता से पाक किया और अपने शाही शौर्य तथा साहस का प्रदर्शन करते हुए एक भी मंदिर को खड़ा नहीं रहने दिया'। हम महात्मा गाँधी को देखें कि वे भी मानते हैं 'किसी भी धार्मिक उपासना गृह के ऊपर बलपूर्वक अधिकार करना बड़ा जघन्य पाप है।

मुगलकाल में धार्मिक धर्मांधता के कारण मुगल शासकों ने हिंदुओं के बहुत से धार्मिक स्थलों पर कब्जा कर लिया था, जो, हिंदुओं के पवित्र आराधना के स्थल थे। इसमें से बहुत से लूट–पाट करके नष्ट कर दिए और बहुतों पर मस्जिद बना दी गई। गाँधी जी कहते हैं कि 'मन्दिरों को तोड़कर बनाई गई मस्जिदें गुलामी के चिह्न हैं'। इसी तरह 'मआसिर–ए–आलमगिरी' पुस्तक के अनुसार औरंगजेब ने 8–9 अप्रैल, 1669 को अपने सूबेदार अबुल हसन को फरमान जारी किया था कि 'वो जाएँ और काशी के मंदिरों को तोड़ें'।

इस फरमान के बाद सितंबर 1669 में अबुल हसन ने औरंगजेब को अपनी जवाबी चिट्ठी में लिखा कि, 'मंदिर तोड़ दिया गया है, वहीं वहाँ पर मस्जिद बना दी गई है'। इन तमाम बातों से बड़ी आसानी से समझा जा सकता है कि देश में आए आक्रांताओं ने हमारे शिक्षा के सँस्थान एवं मन्दिरों–मठों को ही अपनी हिंसा के लिए सबसे पहले चुना। ऐसा इसलिए क्योंकि ये मंदिर ही तो हमें एकत्व के भाव–विचार से जोड़ते हैं, हमारे शिव–शक्ति, राम–कृष्ण हमारे देवता, ये ही तो हमारी सँस्कृति से हमारा परिचय कराते हैं।

जब हम प्रभु राम का स्मरण करते हैं, तो प्रभु के व्यक्तित्व का स्मरण करते ही आदर्श व्यक्ति जैसा जीवन जीना, इसके मूल्यों को भी आसानी से समझ लेते हैं। रामराज्य की संकल्पना एक आदर्श समाज के जीवन मूल्य नहीं, तो और क्या हैं ? शिव–शक्ति हमें त्याग एवं सशक्तिकरण का संदेश देते हैं, वहीं भगवान कृष्ण व्यवहारिक जीवन जीने के मूल्य उपलब्ध कराते हैं। इसलिए मंदिर, मठ हमारे लिए प्राण वायु हैं, ये ही हमारे भारत की पहचान और अस्मिता है।

विश्व हिंदू परिषद की युवा इकाई बजरंग दल द्वारा कई जिलों में शौर्य यात्राओं का आयोजन

दक्षिण बिहार। विश्व हिंदू परिषद की युवा इकाई बजरंग दल द्वारा दक्षिण बिहार के अनेक जिलों में शौर्य जागरण यात्राएँ निकाली गई। यात्रा के पूर्व वक्ताओं ने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। लाखों रामभक्तों के बलिदान व त्याग के प्रतीक स्वरूप आज रामलला का भव्य मंदिर हम देख पा रहे हैं।

बैगा जनजाति की परंपरा का अमिट हस्ताक्षर

जोधइया बाई

डॉ. नुपूर निखिल देशकर

जोधइया बाई (जोधैया बाई बैगा) मध्य प्रदेश के डिंडोरी जिले की बैगा जनजाति की एक प्रसिद्ध आदिवासी महिला चित्रकार थीं। उनका जन्म बैगा समुदाय में हुआ था, जो अपनी विशिष्ट सँस्कृति, प्राकृतिक और पारंपरिक कलाओं के लिए प्रसिद्ध है। जोधइया बाई की कला उनके समुदाय और प्राकृतिक परिवेश से प्रेरित थी। बैगा जनजाति में गोदना अर्थात टैटू गुदवाने (बनवाने) की प्राचीन परंपरा है। यह परंपरा उनकी सँस्कृति और धार्मिक मान्यताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। गोदना बैगा जनजाति की पहचान है, जो सौंदर्य, पारंपरिक परंपराओं और आध्यात्मिकता का प्रतीक है। इस जनजाति में ऐसा माना जाता है कि गोदना लिखवाने से बुरी आत्माओं और नकारात्मक ऊर्जा से उनकी सुरक्षा होती है, साथ ही यह उनकी पारंपरिक पीढ़ियों को अपना एक चिन्ह हस्तांतरित करने की प्रथा भी है। ऐसा माना जाता है कि शरीर पर गोदना मृत्यु के बाद आत्मा को नई पहचान देता है, अर्थात बिना गोदने के आत्मा को परलोक में प्रवेश नहीं मिलता।

जोधइया बाई ने यह कला निश्चित ही बचपन में अपनी माँ, दादी, नानी के लेखने और गोंदने की पारंपरिक प्रथा से सीखी, इसीलिए उनके चित्रों में भी बैगा जनजाति की प्रमुख चिन्ह अर्थात प्रतीकों के साथ–साथ प्रकृति से जुड़ी हुई बातों का मूल रूप से चित्रण मिलता है। उनके पति के निधन के पश्चात् जब उनके जीवन को नियति ने रंगविहीन कर दिया, तब जोधइया बाई ने प्रकृति के रंगों से बाहरी संसार को रंगना प्रारंभ किया। उन्होंने 67 वर्ष की आयु में आशीष स्वामी के मार्गदर्शन में अपने अंदर के सोए चित्रकार को जगाया और इतिहास रच कर यह प्रमाणित कर दिया कि कलाकार की कोई आयु नहीं होती।

जोधइया बाई की चित्रकला की मुख्य विशेषता यही थी कि उन्होंने अपने चित्रों में प्राकृतिक तत्वों का समावेश किया, जिसमें जंगल, पेड़–पौधे, पक्षी, जानवर और प्राकृतिक दृश्यों के साथ बैगा समुदाय के धार्मिक और सँस्कृतिक प्रतीक भी सम्मिलित होते थे। जोधइया बाई की चित्र शैली साधारण होने के साथ गहरे संदेशों की प्रधानता लिए हुए थी। उनके चित्रों में सरलता, सहजता, सँस्कृतिक और आध्यात्मिक संदेश छिपे होते थे। जोधइया बाई की चित्रकारी में बाघ, हिरण, हाथी, पक्षी, नाग, वृक्ष, पर्वत इन चिन्हों के साथ–साथ देवी देवताओं के प्रतीक चिन्हों (ॐ, त्रिशूल, स्वास्तिक) को भी स्थान दिया गया, जो यह प्रमाणित करते हैं कि बैगा जनजाति में शिव–शक्ति, गणेश, अग्नि, सूर्य, नदी, पर्वतों आदि का पूजन प्रकृति के देवी–देवताओं के रुप में आदिकाल से किया जा रहा है।

जोधइया बाई की चित्रकारी में सबसे प्रमुख बात यह थी कि वह जिन रंगों का प्रयोग करती थी, वह प्राकृतिक थे, जो उनके चित्रों को अद्वितीय बनाते थे। इन रंगों का निर्माण वह मिट्टी (पीरोठा, गेरु, छुई) पत्तों और फूलों (गैंदा, टेसू, पलाश, गुलाब आदि) कोयला, चारकोल, पेड़ों की छाल आदि से किया जाता था। प्रकृति और परंपराओं से जुड़ी इन सभी विशेषताओं के कारण जोधइया बाई की कला को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली। उन्होंने बैगा जनजाति की पारंपरिक कला को पहचान दिलाई। इसे वैश्विक मंच पर पहुँचाया। उन्हें कई सम्मान भी प्राप्त हुए, जिसमें सन 2022 में उनके कार्य की प्रशंसा करते हुए पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी ने जोधइया बाई को 'नारी शक्ति' सम्मान और 2023 में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी ने 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया था। उनकी कला भारतीय लोक सँस्कृति और बैगा जनजाति के जीवन के संरक्षण का एक जीवंत उदाहरण है। जोधइया बाई ने बैगा जनजाति से जुड़ी कला को न केवल एक पहचान दी, बल्कि इसमें आधुनिक कला को भी शामिल किया, जैसे चित्रकारी के लिए भूमि, दीवाल, वस्त्रों के साथ कैनवास का प्रयोग। पारंपरिक कूची के साथ ब्रश का प्रयोग आदि। जोधइया बाई की कला पहले

स्थानीय गाँवों और मेलों तक सीमित थी, किन्तु कला संगठनों और सँस्कृति–प्रेमी व्यक्तियों ने उनकी प्रतिभा को पहचाना। इसके पश्चात् उनके चित्रों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में स्थान बनाया। उनकी कला को भारत के विभिन्न कला समारोहों में प्रदर्शित किया गया, जैसे भारत भवन, भोपाल और राष्ट्रीय आदिवासी कला प्रदर्शनी।

विदेशों में आयोजित कला प्रदर्शनियों में भी उनकी चित्रकला ने भारतीय 'बैगा जनजाति कला' को पहचान दिलाई। कला समीक्षकों ने भी जोधइया बाई की कला को एक अनूठी विधा के रूप में सराहा, जो बैगा जनजाति के सँस्कृति और प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव को दर्शाती थी। जोधइया बाई की कला ने न केवल उन्हें प्रसिद्धि दिलाई, बल्कि बैगा जनजाति की पारंपरिक कला को एक नई पहचान और सम्मान भी प्रदान किया। उनके उत्कृष्ट कार्य से विभिन्न जनजाति समुदाय की मातृ शक्तियों को अपनी कला को उजागर करने का आत्मविश्वास मिला है। जोधइया बाई ने इस क्षेत्र में कला की जो अखंड अलख जगाई, उससे निश्चित ही भविष्य में भारत के वनवासी समाज की छुपी हुई कलाएँ मुखर होकर बोलेंगी। विपरीत परिस्थितियों में सकारात्मक और रचनात्मक कार्य कैसे किए जाएँ, इसके लिए जोधइया बाई के प्रयास सदैव अविस्मरणीय रहेगें।

देवभूमि उत्तराखण्ड को दैत्यभूमि नहीं बनने देंगे : सोलंकी

हरिद्वार (22 दिसंबर 2024)। विश्व हिन्दू परिषद के युवा संगठन बजरंग दल ने शौर्य जागरण यात्रा का आयोजन किया। बजरंग दल की शौर्य जागरण यात्रा हरिद्वार के दूरस्थ ग्रामीण अंचलों से निकल कर हरिद्वार शहर की मुख्य सड़कों से होती हुई भारत सेवा संघ आश्रम, अग्रसेन चौक के सभागार में एक विशाल जनसभा के रुप परिवर्तित हुई। शौर्य जागरण यात्रा में विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए सोहन सिंह सोलंकी क्षेत्रीय संगठन मंत्री मेरठ क्षेत्र–विहिप ने कहा कि उत्तराखण्ड देवताओं की भूमि है, यह वीरों और बलिदानियों की भूमि है, यह मातृभूमि रक्षकों की भूमि है। जब भी देवभूमि पर विधर्मियों ने दुःसाहस करने का प्रयास किया, तब हमारे बुजुर्ग, महापुरुषों और बलिदानियों ने मुँहतोड़ जवाब दिया। उत्तराखण्ड में लव जिहाद, गो हत्या, धर्म परिवर्तन, लैंड जिहाद, मजार जिहाद के माध्यम से देवभूमि का वातावरण खराब करने की कोशिश करने वाले अब बाज आ जाएँ, नहीं तो, बजरंग दल तैयार खड़ा है। उन्होंने सभा में उपस्थित विशाल हिन्दू समुदाय के समक्ष हुंकार भरते हुए कहा कि हम देवभूमि को दैत्यभूमि बिल्कुल नहीं बनने देंगे।

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों के साथ मैदानी क्षेत्रों में बाहर से व्यापार करने के बहाने आए विधर्मियों द्वारा आपराधिक घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है तथा हिंदू धर्म के विरुद्ध षडयंत्र रचे जा रहे हैं, इन्हीं षड्यंत्रों के जवाब के रुप में तथा हिंदुओं का जनजागरण करने के उद्देश्य से ही शौर्य जागरण यात्रा निकाली गई है। सोहन सिंह सोलंकी ने हिंदू हित के लिए कार्य करने वाले बजरंग दल की जमकर प्रशंसा की और कहा कि बजरंग दल केवल एक दल मात्र नहीं बल्कि हिंदुओं का बल है। उन्होंने कहा कि राम मंदिर, धारा 370 के बाद अब हमारी निगाहें पाकिस्तान की ओर हैं। जिहादियों से वर्षों का हिसाब लेने का अब वक्त आ गया है। उन्होंने नारा दिया कि तेल लगाओ सरसों का, अब हिसाब लेंगे वर्षों का।

बजरंग दल के प्रांत संयोजक अनुज वालिया ने कहा कि वर्तमान समय में हिंदू समाज सुरक्षित महसूस नहीं करता है। अफगानिस्तान में हिंदू समाप्त हो गया। बाँग्लादेश में हिंदू बहन–बेटियों के साथ अनाचार, अत्याचार कर मारा जा रहा है। बजरंग दल के निर्भीक कार्यकर्ता हिंदू बहन– बेटियों की रक्षा करते हैं, मठ–मंदिरों की रक्षा करते हैं, गौ माता की रक्षा करते हैं, भारत माता के लिए जीते और मरते हैं। गौ हत्या रोकने व बहन–बेटियों को बचाने में बजरंग दल के कार्यकर्ता हुतात्मा होते रहे हैं। आज हम भगवान राम की पूजा करें और शबरी माँ को अछूत कहें, यह कहाँ का न्याय है? हम सब मिलकर जाति, छुआछूत को समाप्त कर समरस, समर्थ और सुरक्षित समाज की स्थापना करेंगे। अजय कुमार प्रांत संगठन मंत्री–विहिप ने कहा कि अगर हिंदू जातिवाद छोटे–बड़े में बढ़ता रहा, तो वह दिन दूर नहीं, जब हिंदू अल्पसँख्यक हो जाएगा, इसीलिए हिंदुओं को एकजुट होकर जिहादियों का मुँहतोड़ जवाब देना होगा। बजरंग दल की शौर्य जागरण यात्रा में हजारों की सँख्या में बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने बढ़–चढ़ कर भागीदारी की तथा अपनी सँख्या बल को जय श्री राम के नारों के साथ दर्शाने का प्रयास भी किया।

यूपी के मिनी पंजाब में फिर खालिस्तानियों की दस्तक

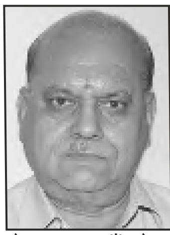

अजय कुमार

उत्तर प्रदेश के पीलीभीत में तीन खालिस्तानी आतंकवादियों के मुठभेड़ में मारे जाने के बाद यहाँ के लोगों में तीन दशकों के बाद एक बार फिर डर का माहौल बन गया है। पंजाब में जब 80–90 के दशक में सिख आतंकवाद चरम पर था, उस समय उत्तर प्रदेश के तराई के कुछ जिले भी इससे प्रभावित हुए थे। तब यूपी का विभाजन नहीं हुआ था। उस दौर में लखीमपुर खीरी, पीलीभीत, खटीमा, नैनीताल जैसे सिख आबादी वाले जिलों में प्रायः आतंकियों के पनाह लेने और वारदात करने की खबरें मिल जाती थी, लेकिन विगत लगभग तीन दशकों से यहाँ का वातावरण बहुत बदल चुका है, सिख आतंकवाद के किस्से किताबों में सिमट गये थे, परंतु गत दिवस पीलीभीत के पूरनपुर में तीन खालिस्तानी आतंकियों के एनकाउंटर से एक बार फिर वर्षों बाद तराई का इलाका दहल उठा। बात 80 और 90 के दशक की कि जाए, तो उस समय जब पंजाब में खालिस्तानी आतंकवाद चरम पर था। उस दौरान करीब 12 वर्ष तक तराई में भी इस आतंक का साया रहा था। तब पीलीभीत और लखीमपुर खीरी में खालिस्तान आतंकवादियों ने कई लोगों की हत्या कर दी थी। सबसे चर्चित पीलीभीत की वो घटना है, जो जुलाई 1992 में हुई थी। आतंकवादियों ने जंगल में एक साथ 29 लोगों की हत्या कर दी थी। यह वर्ष 1985 से लेकर 1997 के बीच का दौर था, जब तराई इलाके में जिला खीरी से लेकर शाहजहांपुर के खुटार, पीलीभीत के पूरनपुर से लेकर उत्तराखंड के जिला ऊधमसिंह नगर और नैनीताल तक खालिस्तान समर्थकों का आतंक रहा। उस दौरान खालिस्तान समर्थक आतंकी संगठनों ने यहाँ कई बड़ी और चर्चित घटनाओं को अंजाम दिया था।

उस दौरान मैलानी गुरुद्वारे में रह रहे खुफिया विभाग के दरोगा को गोली मारने का मामला फिर जंगल में छिपे इस कांड के आरोपी भीरा निवासी सुखविंदर सिंह का तत्कालीन एसपी ओपी सिंह द्वारा एनकाउंटर किया जाना हो, या फिर खीरी के मैलानी के आसपास पीलीभीत और शाहजहांपुर के कई इलाके खालिस्तानी आतंकवादियों के हमेशा निशाने पर होने की बात, तब माहौल काफी भयावह रहता था। इसी तरह से वर्ष 1988–89 में मैलानी–भीरा के मध्य राज नारायणपुर रेलवे क्रॉसिंग के पास दुग्ध वाहन को रोककर, उसमें सवार एक दर्जन लोगों की खालिस्तान आतंकवादियों ने हत्या कर दी थी। इस नरसंहार को खालिस्तानी आतंकवादियों के मेजर गुट ने अंजाम दिया था। 26 नवंबर 1995, 26 अक्टूबर 1997 और 28 मार्च 1998 को भीखमपुर–मैलानी के बीच रेलवे ट्रैक काट कर नैनीताल एक्सप्रेस ट्रेन को पलटने की साजिश के पीछे भी खालिस्तान उग्रवादियों का हाथ होने की बात सामने आई थी।

बहरहाल एक बार फिर अब पंजाब और उत्तर प्रदेश पुलिस को पीलीभीत में तीन खालिस्तानी आतंकियों को मार गिराने में जो सफलता मिली, वह एक बड़ी सफलता है। मारे गए आतंकियों के पास से दो एके–47 राइफलों के साथ विदेशी पिस्टल और बड़ी मात्रा में कारतूस मिले। पुलिस और खुफिया सूत्रों के अनुसार यह आतंकी पिछले कुछ समय से पंजाब में थानों और चौकियों पर बम फेंक कर आतंक का माहौल कायम करने में लगे थे। इनका संबंध खालिस्तान जिंदाबाद फोर्स नामक आतंकी संगठन से बताया जा रहा है। पता यह भी चला है कि विदेश में बैठे खालिस्तानी तत्वों ने पीलीभीत में मारे गए आतंकियों को हथियार उपलब्ध कराए थे। यदि यह सही बात है, तो इसकी गहनता से पड़ताल होनी चाहिए कि वे ऐसा करने में कैसे समर्थ हो गए। पड़ताल इसकी भी होनी चाहिए कि मारे गए आतंकी पंजाब में थानों और चौकियों को निशाना बनाने के बाद पीलीभीत में क्या करने आए थे? पीलीभीत उनके छिपने के लिए सुरक्षित ठिकाना था, या

फिर वे यहाँ कोई वारदात करने की फिराक में थे। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि जिस समय पंजाब में खालिस्तानी आतंकवाद अपने चरम पर था, तब पीलीभीत और उसके आसपास का तराई का इलाका खालिस्तानी आतंकियों का गढ़ बन गया था।

सिख आबादी की ठीक–ठीक सँख्या के चलते तराई के इस इलाके को मिनी पंजाब कहा जाता है। ऐसे में यह सोचना गलत नहीं है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि इस इलाके में खालिस्तान समर्थक फिर से सक्रिय हो गए हैं और उनके चलते ही मारे गए आतंकी पीलीभीत आए हों। जो भी हो, यह ठीक नहीं कि पंजाब में खालिस्तानी आतंकियों का दुस्साहस बढ़ता जा रहा है। खालिस्तानी आतंकियों के बढ़ते दुस्साहस का पता इससे चलता है कि बीते कुछ समय से पंजाब में एक के बाद एक आठ थानों और चौकियों में बम से हमले हो चुके हैं। इन हमलों की जिम्मेदारी खालिस्तानी आतंकी संगठनों ने ली है। इनमें से एक संगठन खालिस्तान जिंदाबाद फोर्स भी है। पंजाब में थानों और चौकियों को निशाना बनाए जाने की घटनाओं का आकलन करने वाली राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने आशंका जताई है कि विदेश से संचालित खालिस्तानी आतंकी संगठन पंजाब में कोई बड़ी वारदात करने की कोशिश में हैं। यह आशंका कितनी प्रबल है, इसका पता इससे चलता है कि चंडीगढ़ में पंजाब पुलिस मुख्यालय की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। यह ठीक है कि कुछ खाली पड़ी पुलिस चौकियों पर भी बम फेंके गए, लेकिन इन घटनाओं से यह तो पता चलता ही है कि खालिस्तानी आतंकी बेलगाम हो रहे हैं। अब जब पीलीभीत की घटना से यह स्पष्ट हो रहा है कि खालिस्तानी आतंकी पड़ोसी राज्यों में पैर पसार रहे हैं, तो पंजाब पुलिस को ऐसे सभी राज्यों और खासकर उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, हिमाचल आदि की पुलिस से अपना सहयोग एवं समन्वय बढ़ाना होगा।

यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि 90 के दशक के अंत में जब सिख आतंकवाद की रीढ़ टूट गई थी, उसके बाद 18 सितंबर 2017 को यहाँ दोबारा उसी आतंक की दस्तक हुई थी, जब यूपी एटीएस और पंजाब पुलिस की टीम ने खीरी जिले से प्रतिबंध आतंकी संगठन बब्बर खालसा के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया था। यह दोनों हरप्रीत उर्फ टोनी और सतनाम सिंह खीरी जिले के निवासी थे। इन्हें पंजाब की नाभा जेल से 27 नवंबर 2016 को दो आतंकी और चार गैंगस्टर को फरार कराया गया था। इसी मामले में लखीमपुर के हरप्रीत उर्फ टोनी व सतनाम सिंह के खिलाफ पंजाब के जिला भगत सिंह नगर की अदालत ने गिरफ्तारी वारंट जारी किया था। इन दोनों पर आरोप था कि इन्होंने जेल से भागने वाले आतंकियों को हथियार और अन्य सहायता उपलब्ध कराया था। पुलिस की जांच में यह भी बात सामने आई थी कि यह दोनों लंबे समय से यूपी के तराई इलाके से लेकर पंजाब तक बब्बर खालसा के स्लीपिंग मॉड्यूल के रूप में काम कर रहे थे। हालांकि इन दोनों की गिरफ्तारी के बाद यहाँ मामला शांत रहा, लेकिन अभी कुछ दिन पहले ही यहाँ पंजाब के आतंकवादी नारायण सिंह चौड़ा का कनेक्शन भी सामने आया था। पंजाब में आतंकवादी चौड़ा ने पुलिस रिमांड में यह बयान दिया था कि उसने खीरी जिले के नेपाल बॉर्डर से सटे क्षेत्र में हथियार छिपा कर रखे हैं। इसके बाद पंजाब पुलिस द्वारा आतंकवादी चौड़ा को यहाँ लाए जाने को लेकर दो–तीन दिनों तक काफी हलचल रही थी। अब पीलीभीत में मुठभेड़ में तीन खालिस्तानी आतंकवादियों के मारे जाने के बाद भारत–नेपाल सीमा से सेट क्षेत्र में सुरक्षा और खुफिया एजेंसियाँ अलर्ट हो गई हैं।

विहिप-विशेष संपर्क विभाग द्वारा 'वर्तमान चुनौतियों में अपनी भूमिका' विषय पर विचार गोष्ठी आयोजित

पटना, 15 दिसम्बर। पटना स्थित बिहार चैंबर ऑफ कॉमर्स के द्वितीय तल में विश्व हिंदू परिषद के विशेष संपर्क विभाग द्वारा 'वर्तमान चुनौतियों में अपनी भूमिका' विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में सैकड़ों की सँख्या में शहर के प्रबुद्ध जनों ने भाग लिया।

गोष्ठी में वक्ताओं ने वर्तमान समय की प्रमुख चुनौतियों जैसे धर्मांतरण, लव जिहाद और घुसपैठ पर गंभीरता से चर्चा की। उन्होंने कहा कि हिंदू समाज को इन मुद्दों के प्रति सतर्क, जागरूक और अपनी सनातन परंपराओं के प्रति सजग रहना चाहिए। गोष्ठी को संबोधित करते हुए पद्मश्री डॉ. आर.एन. सिंह ने कहा कि आज देश में 5 करोड़ से अधिक घुसपैठिए मौजूद हैं, जो भारत की अर्थव्यवस्था को कमजोर कर रहे हैं। उन्होंने घुसपैठियों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इनमें से कई देश विरोधी गतिविधियों में लिप्त हैं और जनसँख्या संतुलन को बिगाड़ रहे हैं, जो भारत के भविष्य के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, विहिप के केंद्रीय मंत्री अम्बरीश जी ने कहा कि वर्तमान समय में भारत के सामने कई चुनौतियाँ हैं, जो देश की परंपरा, सभ्यता और सँस्कृति को नुकसान पहुँचाने का प्रयास कर रही हैं। लेकिन भारत माता के जागरूक और सक्षम पुत्र इन सभी समस्याओं का समाधान करेंगे। उन्होंने त्याग और समर्पण की भावना से कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने यह भी बताया कि विहिप इन चुनौतियों का सामना करने के लिए हजारों सेवा प्रकल्प चला रहा है। विहिप हर वर्ष लगभग 50,000 परावर्तन (घर वापसी) करा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में विहिप हजारों सँस्कारशालाओं का संचालन कर रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी विहिप कई अस्पताल और मेडिकल कैंपों के माध्यम से समाज की सेवा कर रहा है। विहिप के युवा विभाग बजरंग दल की गोवंश संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका है। हर वर्ष लाखों गोवंश को कत्लखानों से बचाया जा रहा है और सैकड़ों गौशालाओं का संचालन कर गौ सेवा को बढ़ावा दिया जा रहा है। गोवंश और गौ उत्पादों की महत्ता को जन–जन तक पहुँचाने के लिए भी बजरंग दल और विहिप व्यापक प्रचार–प्रसार कर रहे हैं।

पीली सरसों का बहुआयामी महत्व

परंपरा, आध्यात्मिकता और पोषण का मिश्रण

डॉ. आनंद मोहन

सहयोगी - डॉ. अग्रताबेन वघेल, सबरीन बशीर, आलोक मोहन

पीली सरसों, रसोई के मसाले से अधिक यह परंपरा, आध्यात्मिकता और स्वास्थ्य का प्रतीक है। हिंदू अनुष्ठानों में सम्मानित और अपने असाधारण पोषण गुणों के लिए मनाया जाता है, पीली सरसों प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के एक अद्वितीय प्रतिच्छेदन का प्रतीक है।

हिंदू सँस्कृति और आध्यात्मिकता में पीली सरसों –

पीली सरसों हिंदू सँस्कृति और आध्यात्मिकता में एक पवित्र स्थान रखती है। यह देवी दुर्गा, देवी काली और राहु ग्रह जैसे देवताओं से जुड़ा हुआ है, जो दिव्य संरक्षण और इच्छाओं की पूर्ति का प्रतीक है। पूजा और हवन जैसे धार्मिक समारोहों के दौरान सरसों के बीज आमतौर पर आशीर्वाद देने, नकारात्मकता को खत्म करने और शांति और समृद्धि लाने के लिए पेश किए जाते हैं। नवरात्रि के दौरान सरसों का उपयोग विशेष रूप से प्रमुख है, देवी दुर्गा को समर्पित एक त्योहार, जहाँ इसका उपयोग शुद्धि और शक्ति के प्रतीक के रूप में किया जाता है।

अनुष्ठान और सफाई प्रथाओं में भूमिका

पीली सरसों का आध्यात्मिक महत्व धर्मशास्त्र सहित प्राचीन हिंदू शास्त्रों में गहराई से निहित है। ये ग्रंथ लिनन के कपड़ों को शुद्ध करने में सरसों के मिश्रण की भूमिका पर जोर देते हैं, जो स्वच्छता और अनुष्ठान शुद्धता के साथ इसके सहयोग को दर्शाता है। पारंपरिक हिंदू घरों में, नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर भगाने और आध्यात्मिक पवित्रता सुनिश्चित करने के लिए शुभ अवसरों के दौरान सरसों के बीज घर में और उसके आसपास छिड़के जाते हैं। पूजा के दौरान सरसों के तेल के दीपक भी जलाए जाते हैं, जो अंधकार और अज्ञानता के उन्मूलन के प्रतीक हैं।

विश्वास के साथ सरसों के बीज का संबंध गहरा है। हिंदू दर्शन में, यह परिवर्तन की क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है। जिस तरह एक छोटा–सा बीज फलता–फूलता पौधा बनता है, उसी तरह छोटे होने पर भी विश्वास में बढ़ने, प्रेरणा देने और चुनौतियों पर काबू पाने की ताकत होती है। इस प्रतीकात्मक अर्थ ने पीली सरसों को कई आध्यात्मिक प्रथाओं में आधारशिला बना दिया है।

पारंपरिक चिकित्सा और ज्योतिषीय महत्व

पीली सरसों सदियों से पारंपरिक चिकित्सा की आधारशिला रही है। ऐसा माना जाता है कि इसमें शुद्धिकरण और उपचार गुण होते हैं, जो विभिन्न बीमारियों को कम कर सकते हैं। सरसों के बीज को पीसकर मिश्रण बनाकर बनाई गई सरसों की पुल्टिस का उपयोग दर्द, सूजन और श्वसन संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए किया गया है। सरसों के वार्मिंग गुणों का उपयोग आयुर्वेद में शरीर के दोषों को संतुलित करने और रक्त परिसंचरण को प्रोत्साहित करने के लिए भी किया जाता है। वैदिक ज्योतिष में सरसों को ग्रहों के संरेखण के हानिकारक प्रभावों को कम करने की क्षमता के लिए सम्मानित किया जाता है, विशेष रूप से राहु से जुड़े लोगों को। सरसों के बीज छिड़कने या सरसों के तेल का उपयोग करने वाले अनुष्ठानों को नकारात्मक प्रभावों को बेअसर करने, सद्भाव को बढ़ावा देने और किसी के जीवन में संतुलन बहाल

करने में प्रभावी माना जाता है। यह ज्योतिषीय महत्व आध्यात्मिक और साँस्कृतिक संदर्भों में एक रक्षक और शोधक के रूप में सरसों की भूमिका को पुष्ट करता है।

पीली सरसों की रासायनिक संरचना और स्वास्थ्य लाभ

पीली सरसों सिर्फ एक आध्यात्मिक और साँस्कृतिक तत्व नहीं है, यह एक पोषण खजाना निधि भी है। इसके बीज आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं, जो समग्र स्वास्थ्य और कल्याण में योगदान करते हैं। पीली सरसों के बीज लगभग 36.73 प्रतिशत की प्रभावशाली प्रोटीन सामग्री से युक्त हैं, जिससे वे उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन का एक उत्कृष्ट स्रोत बन जाते हैं। इन प्रोटीनों में सभी आवश्यक अमीनो एसिड शामिल है, जैसे लाइसिन, वेलिन और सुगंधित अमीनो एसिड जैसे फेनिलएलनिन और टायरोसिन, जो एफएओ/डब्ल्यूएचओ मानकों से अधिक हैं। यह सरसों को आहार अनुप्रयोगों के लिए एक मूल्यवान घटक बनाता है, विशेष रूप से शाकाहारियों और पौधे–आधारित प्रोटीन स्रोतों की तलाश करने वालों के लिए। पीली सरसों के फैटी एसिड प्रोफाइल में लिनोलिक एसिड (12.37 प्रतिशत), लिनोलेनिक एसिड (12.0 प्रतिशत), और ओलिक एसिड (19.08 प्रतिशत) शामिल हैं। ये आवश्यक फैटी एसिड हृदय स्वास्थ्य को बनाए रखने, सूजन को कम करने और मस्तिष्क समारोह का समर्थन करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। लिनोलिक और लिनोलेनिक एसिड, विशेष रूप से, हृदय रोग और गठिया जैसी पुरानी बीमारियों के जोखिम को कम करने के लिए जाने जाते हैं। पीली सरसों में 5.87 प्रतिशत आहार फाइबर होता है, जो नियमित मल त्याग को बढ़ावा देकर और एक स्वस्थ आंत माइक्रोबायोम को बढ़ावा देकर पाचन स्वास्थ्य का समर्थन करता है। फाइबर सामग्री भी परिपूर्णता की भावना में योगदान देती है, जिससे सरसों वजन प्रबंधन आहार के लिए एक सहायक अतिरिक्त सामग्री बन जाती है।

बायोएक्टिव यौगिक

पीली सरसों ग्लूकोसाइनोलेट्स, विशेष रूप से सिनिग्रिन में समृद्ध है, जो एंजाइमेटिक रूप से एलिल आइसोथियोसाइनेट (एआईटीसी) जैसे बायोएक्टिव यौगिकों में अवक्रमित करता है। एआईटीसी स्वास्थ्य लाभों की एक श्रृंखला प्रदर्शित करता है, जिनमें शामिल हैं यानि की रोगाणुरोधी प्रभाव हानिकारक बैक्टीरिया और कवक के विकास को रोकता है। एंटीऑक्सीडेंट गुण यानि की कोशिकाओं को ऑक्सीडेटिव तनाव से बचाता है और पुरानी बीमारियों के जोखिम को कम करता है और कैंसर–निवारक प्रभाव, जिसमें यह कोशिकाओं के विकास को रोक सकता है, विशेष रूप से पाचन तंत्र में। ये गुण पीली सरसों को चिकित्सीय क्षमता के साथ एक कार्यात्मक खाद्य घटक बनाते हैं।

पाक अनुप्रयोग : परंपरा से आधुनिकता तक

पीली सरसों की बहुमुखी प्रतिभा इसके पाक अनुप्रयोगों तक फैली हुई है, जहाँ यह स्वाद और बनावट दोनों को बढ़ाती है। सरसों के बीज भारतीय खाना पकाने में एक प्रधान सामग्री है, जिसका उपयोग दाल, करी और अचार जैसे तड़का लगाने वाले व्यंजनों में किया जाता है। इसका तीखा, चटपटा स्वाद व्यंजनों में गहराई जोड़ता है, जबकि सरसों का तेल अपने अनोखे स्वाद के कारण तलने और पकाने के लिए एक पसंदीदा माध्यम है। आधुनिक पाक प्रथाओं में, पीली सरसों का उपयोग सॉस, ड्रेसिंग और मैरिनेड बनाने के लिए किया जाता है। इसके प्रोटीन उत्कृष्ट खाद्य उत्पादों की बनावट और स्थिरता में सुधार करते हैं। ये कार्यात्मक गुण इसे पके हुए मसालों सहित प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के लिए एक आदर्श घटक बनाते हैं।

पीली सरसों को शामिल करने के स्वास्थ्य लाभ

पीली सरसों को दैनिक आहार में शामिल करने से कई स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं। प्रोटीन, फाइबर, फैटी एसिड और बायोएक्टिव फाइटोकेमिकल्स का इसका संयोजन स्वास्थ्य के कई पहलुओं का समर्थन करता है, जिनमें शामिल हैं – हृदय स्वास्थ्य, पाचन कल्याण, प्रतिरक्षा समर्थन और पुरानी बीमारी की रोकथाम। पीली सरसों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले गुण इसे आधुनिक आहार प्रथाओं के लिए मूल्यवान बनाते हैं।

निष्कर्ष – पीली सरसों परंपरा, आध्यात्मिकता और पोषण का एक उल्लेखनीय मिश्रण है। हिंदू अनुष्ठानों में इसकी भूमिका, इसके आध्यात्मिक महत्व को रेखांकित करती है, जबकि इसके स्वास्थ्य लाभ और पाक बहुमुखी प्रतिभा आधुनिक जीवन में इसके मूल्य को प्रदर्शित करती है। पीली सरसों की बहुआयामी प्रकृति को अपनाकर, हम इसकी समृद्ध विरासत का सम्मान करते हैं। यह विनम्र बीज प्राचीन ज्ञान और समकालीन जरूरतों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है, जो हमें स्वस्थ और अधिक सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

गुणों से भरपूर कड़ी पत्ता की सूखी चटनी

बनाने की विधि

सामग्री को भूनना — एक कढ़ाई में चना दाल को हल्का सुनहरा होने तक भूनें। (अगर आप मूंगफली का उपयोग कर रहे हैं, तो उसे भी भून लें।) अब इसमें लाल मिर्च, कद्दूकस किया हुआ अदरक और कढी पत्ता डालें। सभी सामग्री को अच्छे से मिलाएँ और कढी पत्ते को हल्का सा भूनें, जब तक कि वह कुरकुरी न हो जाए (अगर आप सूखा नारियल डालना चाहते हैं, तो इसे भी इसी समय डालें और हल्का भूनें।)

मिश्रण को ठंढ़ा करना — भुनी हुई सामग्री को कढ़ाई से निकालकर एक प्लेट में रख दें और इसे थोड़ी देर के लिए ठंढा होने दें।

चटनी बनाना — ठंढे हुए मिश्रण को एक मिक्सर जार में डालें और इसमें नमक और हल्दी पाउडर डालें, अब इसे अच्छे से पीसकर एक पाउडर बना लें, अगर आपको थोड़ी मोटी चटनी पसंद है, तो इसे अधिक महीन न पीसें।

तड़का (वैकल्पिक) — एक छोटे पैन में 1—2 चम्मच तेल गरम करें, जब तेल गरम हो जाए, तो, उसमें कुछ कढी पत्ते डालें और उन्हें चटकने दें, अब इस तड़के को चटनी पर डालें।

सर्व करना — कढी पत्ता की सूखी चटनी तैयार है, इसे किसी एयरटाइट कंटेनर में रखें और नाश्ते के साथ परोसें।

आप इस चटनी को अपनी पसंद के अनुसार और भी मसालेदार या कम मसालेदार बना सकते हैं। यह चटनी कई दिनों तक फ्रिज में सुरक्षित रखी जा सकती है।

सामग्री

कढी पत्ता	—	1 कप (ताजा)
चना दाल	—	2 बड़े चम्मच
मूंगफली	—	2 बड़े चम्मच (वैकल्पिक)
सूखा नारियल	—	2 बड़े चम्मच (कद्दूकस किया हुआ, वैकल्पिक)
लाल मिर्च	—	2—3 (स्वाद अनुसार)
अदरख	—	1 इंच (कद्दूकस किया हुआ)
नमक	—	स्वादानुसार
हल्दी पाउडर	—	1/4 चम्मच
तेल	—	1—2 चम्मच (तड़के के लिए, वैकल्पिक)

विहिप-बजरंग दल ने दुर्गोत्सव समितियों को बजरंग दल से जोड़ा

अशोकनगर, 28 दिसम्बर। बजरंग दल से जुड़ी सभी दुर्गोत्सव समितियाँ त्रिशूल दीक्षा धारण करेंगी। हम मोहल्ले—मोहल्ले में सत्संग चलायेंगे। प्रांत धर्म प्रसार प्रमुख डॉ. दीपक मिश्रा ने कहा कि हर हिंदू को जात—पांत से ऊपर उठकर सामाजिक समरसता के साथ ऊँच—नीच के भेदभाव को भूलकर हिंदू हित के लिए संगठित होना पड़ेगा, सभी ने संकल्प लिया और कहा कि हम भारत माता की रक्षा, राष्ट्र की रक्षा, अपने मोहल्ले की रक्षा, परिवार की रक्षा के लिए विश्व हिंदू परिषद—बजरंग दल से जुडकर कार्य करने को समर्पित रहेंगे। जिस प्रकार से बाँग्लादेश में हिंदुओं की दुर्दशा हो रही है, उससे हमको सबक लेना होगा। हिंदू प्राणियों में सद्भावना, विश्व के कल्याण के विचार का पालन करना है, इसलिए हिंदू भारत माता को विश्व गुरु बनाने के लिए कार्य कर रहा है। भारत विश्व गुरु होगा, तभी प्राणियों में सद्भावना, विश्व का कल्याण होगा।

कार्यक्रम में बजरंग दल विभाग संयोजक वेदराम लोधी द्वारा युवाओं से आवाहन किया गया कि बजरंग दल से जुड़िए, राष्ट्र रक्षा के लिए संकल्प लीजिए। कार्यक्रम का संचालन जिला सह मंत्री हेमंत जैन द्वारा किया गया।

deepakmishravhp@gmail.com

विजयवाड़ा से होगा मंदिरों के सरकारी नियंत्रण से मुक्ति का शंखनाद

विहिप ने की देशव्यापी जन-जागरण अभियान की घोषणा

मन्दिरों को हिन्दू समाज को सौपने से पूर्व हमारा आग्रह है कि–

- ❖ मंदिरों व ऐंडौमेंट विभाग में नियुक्त सभी गैर हिंदुओं को निकाला जाए।
- ❖ भगवान की पूजा, प्रसाद व सेवा में सिर्फ गहरी आस्था रखने वाले हिंदुओं को ही लगाया जाए।
- ❖ मंदिर के न्यासियों व प्रबन्धन में किसी राजनेता या किसी राजनीतिक दलों से जुड़े व्यक्तियों को ना रखा जाए।
- ❖ मंदिर के अंदर और बाहर के हिस्सों में सिर्फ हिंदुओं की ही दुकानें हों।
- ❖ मंदिर की जमीन पर गैर हिंदुओं द्वारा बनाए हुए तथा अन्य सभी अवैध निर्माणों को हटाया जाना चाहिए।
- ❖ मंदिरों की आय को सिर्फ हिंदू धर्म के प्रचार और उससे जुड़े विषयों पर ही खर्च किया जाए। सरकारी कार्यों में कदापि नहीं।

नई दिल्ली, 26 दिसम्बर, 2024। हिन्दू मन्दिरों की सरकारी नियंत्रण से मुक्ति हेतु विश्व हिन्दू परिषद ने गुरुवार को देशव्यापी जन–जागरण अभियान की घोषणा कर दी है। विश्व हिन्दू परिषद के संगठन महामंत्री श्री मिलिंद परांडे ने एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि अब सभी राज्य सरकारों को मंदिरों के नियंत्रण, प्रबंधन और दैनंदिनी कार्यों से स्वयं को अविलंब अलग कर लेना चाहिए, क्योंकि उनका यह कार्य हिंदू समाज के प्रति भेदभावपूर्ण है। पूज्य संतों और हिंदू समाज के श्रेष्ठ लोगों की अगुवाई में आगामी 5 जनवरी से इस संबंध में हम एक देशव्यापी जन जागरण अभियान को प्रारम्भ करने जा रहे हैं। इस अखिल भारतीय अभियान का शंखनाद आन्ध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में आयोजित 'हैंदव शंखारावम' नामक लाखों लोगों के विशेष व विराट समागम में होगा।

विहिप संगठन महामंत्री ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि देश की स्वाधीनता के उपरांत जिस हिन्दु–द्रोही काम पर विराम लग जाना चाहिए था, अर्थात मंदिरों को हिंदू समाज को सौंप देना चाहिए था, एक के बाद एक अनेक राज्य सरकारें संविधान के अनुच्छेद 12, 25 और 26 की अनदेखी करती रहीं। जब कोई मस्जिद या चर्च उनके नियंत्रण में नहीं, तो भला हिंदुओं के साथ ही यह भेदभाव क्यों? अनेक माननीय उच्च न्यायालयों तथा सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा दिए गए स्पष्ट संकेतों के बावजूद भी राज्य सरकारें मंदिरों के प्रबंधन व सम्पत्तियों पर कब्जा जमा कर बैठी रहीं।

श्री परांडे ने कहा कि मंदिरों के प्रबंधन और नियंत्रण का कार्य, अब हिंदू समाज के निष्ठावान व दक्ष लोगों को सौंप देना चाहिए। इस बारे में हमने माननीय सर्वोच्च न्यायालय के प्रतिष्ठित वकीलों, उच्च न्यायालयों के सेवा निवृत्त मुख्य न्यायाधीशों, पूज्य संतों तथा विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं को मिलाकर एक चिंतन टोली बनाई है, जिसने मंदिरों के प्रबंधन व उससे जुड़े किसी भी प्रकार के विवादों के निस्तारण

हेतु अध्ययन कर एक प्रारूप तैयार किया है। इसमें यह बात और सामने आई है कि जब सरकारें मंदिर समाज को लौटाएँगी, तो स्वीकार कैसे करेंगे और किस प्रावधान के अंतर्गत करेंगे। इसीलिए कुछ संवैधानिक पदों पर बैठे व्यक्तियों द्वारा पूज्य संतों, सेवानिवृत्त न्यायमूर्ती या जज तथा सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारियों के साथ समाज के वे प्रतिष्ठित लोग, जो हिंदू शास्त्रों और आगम की विधियों के ज्ञाता हैं, ऐसे लोगों को एकत्र कर राज्य स्तर की एक धार्मिक परिषद बनाएँगे। यह राज्य स्तरीय परिषद, जिला स्तरीय परिषद् व मंदिर के न्यासियों का चुनाव करेगी, जिसमें अनुसूचित जातियों और जन–जातियों के साथ समाज के विविध वर्गों का सहभाग होगा। विवादों के निस्तारण के लिए एक प्रक्रिया निश्चित की जाएगी। ऐसे प्रस्तावित कानून का एक प्रारूप गत सप्ताह ही हमने आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री चंद्रबाबू नायडू से मिलकर, उन्हें, उनके विचारार्थ सौंपा था। हमारी ऐसी ही चर्चा अन्य राज्य सरकारों तथा विविध राजनीतिक दलों से भी चल रही है।

इससे पूर्व गत 30 सितम्बर को विहिप ने देश के सभी राज्यों के राज्यपालों को ज्ञापन सौंप कर उनकी सरकारों को मंदिरों के प्रबंधन से हट जाने के लिए निवेदन किया था। मंदिरों की मुक्ति के इस अखिल भारतीय जागरण अभियान के अन्तर्गत इन मंदिरों की चल–अचल सम्पत्तियों की रक्षा तथा उनके योग्य विनियोग–समाज की सेवा तथा धर्म प्रचार हेतु करने के लिए हिंदू समाज का जागरण प्रारम्भ हो गया है।

vhpintlhqs2@gmail.com

समरसता संगोष्ठी

विश्व हिंदू परिषद सामाजिक समरसता अभियान उत्तर गुजरात प्रांत के नडियाड जिले में दिनांक 27 दिसंबर, 2024 शुक्रवार के दिन सायं 6.00 बजे 'डॉक्टर अंबेडकर हॉल' में समरसता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य हिंदू समाज में व्याप्त ऊँच–नीच, ज्ञाति––जाति, अस्पृश्यता जैसी विषमताओं को संघर्ष नहीं संवाद, हिंदू समाज के प्रबोधन एवं सामूहिक चेतना के जागरण के द्वारा दूर करना तथा संगठित–समरस हिंदू समाज का निर्माण करना था। इस कार्यक्रम में 636 परगणा, रोहित समाज के अग्रणी श्री पी. टी. मकवाणा साहब, चरोतर बुनकर (वणकर) समाज के संस्थापक सदस्य श्री जयराम भाई परमार साहब, चरोतर वाल्मीकि समाज के अग्रणी श्री भूपेंद्र वाघेला साहब, ब्रह्मभट्ट समाज के गौतम भाई ब्रह्मभट्ट, विश्व हिंदू परिषद के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री रंगराजे जी, मंदिर अर्चक पुरोहित संपर्क आयाम के केंद्रीय प्रमुख श्री अरुण जी नेटके, क्षेत्रीय समरसता प्रमुख रसेश भाई रावल, प्रांत सह मंत्री श्री मुकेश भाई गौर, कमलेश भाई सूतरिया एवं नडियाड जिला विश्व हिंदू परिषद के सभी प्रमुख कार्यकर्ता, विविध समाज के अग्रणी तथा बड़ी सँख्या में माता–बहनें तथा आमंत्रित मेहमान विशेष रुप से उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम के प्रमुख वक्ता विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय सह संगठन महामंत्री श्री विनायक राव देशपांडे थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि अशोक जी ने शंकराचार्य, माधवाचार्य तथा कई संतों से पूछा कि छुआछूत की बीमारी भारत में कब से प्रारंभ हुई, किस शास्त्र में इसका उल्लेख है ? किसी ने इसका शास्त्रोक्त उत्तर नहीं दिया। प्रयाग महाविद्यालय के प्रोफेसर के.एस. लाल ने अपनी पुस्तक में मध्य युग में अनुसूचित जाति, जनजाति की बढ़ोतरी कैसे हुई वह दर्शाया है। डॉक्टर बाबा साहब का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि डॉक्टर अंबेडकर ने स्वयं कहा है कि सवर्ण, दलित, पिछड़ा, आदिवासी, घुमंतू हों, यह सभी आर्य हैं। 12वीं सदी के पहले किसी भी शेड्यूल कास्ट की जातियाँ महेतर, रोहित (चमार), वाल्मीकि आदि जातियों का उल्लेख नहीं मिलता। क्योंकि वह जातियाँ अस्तित्व में ही नहीं थी। मुगल शासन में पराजित योद्धाओं से मैला उठवाना, चमड़ा–मांस के कार्य में जोड़ा, लेकिन उन्होंने अपना सनातन हिन्दू धर्म नहीं छोड़ा और यह जातियाँ अस्तित्व में आईं। उन्होंने हिंदू समाज को इन 'धर्मयोद्धा' जातियों का सम्मान कर इसे अपने साथ जोड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हमें उपकार नहीं करना चाहिए, सम्मान देना चाहिए, बराबरी का हक देना चाहिए, मुझे मेरे घर से यह कार्य प्रारंभ करना चाहिए। मेरा व्यवहार, मेरा आचरण तथा समग्र हिंदू समाज की मानसिकता समरसतामय बने उसके लिए विश्व हिंदू परिषद कई प्रकार के कार्यक्रमों द्वारा प्रयत्न कर रहा है। सभी को मिलकर हिंदू समाज की एकता व समरसता के लिए कार्य करना चाहिए। प्रमुख पदाधिकारियों ने अनुसूचित जाति समाज के परिवार में जाकर संपर्क–परिचय एवं सहभोज का आनंद लिया तथा कार्यक्रम के अंत में पधारे हुए सभी आमंत्रित मेहमानों ने समरसता सहभोज का आनंद लिया। समरसता से राष्ट्र रक्षा का भाव चारों ओर देखा गया।

प्रस्तुति : रसेश भाई रावल,
गुजरात क्षेत्र समरसता प्रमुख

विश्व हिंदू परिषद, इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) प्रांत बजरंग दल के युवा कार्यकर्ताओं ने ली त्रिशूल दीक्षा

बजरंग दल त्रिशूल दीक्षा कार्यक्रम के संदर्भ में लगभग तीन माह (सितम्बर 2024) पूर्व से तैयारी शुरू की गयी। दिल्ली के 30 जिलों में बैठकें हुई। सभी जिला संयोजकों को एक फार्म वितरित किया गया, जिसमें त्रिशूल दीक्षार्थी की जानकारी नाम, पता, मोबाईल नम्बर आदि भरकर जमा कराया गया। प्रत्येक बैठक में लगभग 200 से 500 की सँख्या उपस्थित रही थी। विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल के कार्यकर्ताओं द्वारा पूर्व की बड़ी तैयारी के बाद 15 दिसम्बर को त्रिशूल दीक्षा का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें 10 हजार लोगों ने रजिस्ट्रेशन कराया। पहले से सबका शुल्क इकट्ठा करके प्रांत में जमा कराया गया। 10 हजार लोगों के रजिस्ट्रेशन के बाद 8 हजार युवा बजरंगी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए, जिसमें से 5 हजार युवाओं को 15 दिसम्बर को त्रिशूल दीक्षा शपथ ग्रहण कराकर वितरित किया गया। इस तरह से एक बड़ा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जो बाकी बजरंगियों का शुल्क आया है, उनको प्रत्येक प्रखण्ड स्तर पर कार्यक्रम करके त्रिशूल दीक्षा दी जायेगी। दिल्ली में अभी 50 हजार युवाओं को त्रिशूल दीक्षा दी जायेगी।

15 दिसंबर विश्व हिंदू परिषद (विहिप) की युवा इकाई बजरंग दल दिल्ली प्रान्त की ओर से त्रिशूल दीक्षा समारोह का आयोजन नूतन मराठी स्कूल, आराम बाग, पहाड़गंज, दिल्ली में किया गया, जिसमें पाँच हजार युवा कार्यकर्ताओं ने त्रिशूल दीक्षा ग्रहण की। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता केंद्रीय संयुक्त महामंत्री श्री सुरेन्द्र जैन ने दीक्षा ग्रहण करने वाले युवाओं को आशीर्वचन दिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री चरणजीव मल्होत्रा ने की और विशेष उपस्थिति प्रसिद्ध बौद्ध संत पूजनीय राहुल भंते जी और पूजनीय साध्वी दीप्ति माँ, विहिप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री मुकेश खांडेकर, दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष श्री कपिल खन्ना, प्रांत मंत्री श्री सुरेंद्र गुप्ता, बजरंग दल के संयोजक श्री

जगजीत सिंह गोल्डी, संगठन मंत्री इंद्रप्रस्थ क्षेत्र श्री सुबोध जी की रही।

बौद्ध संत पूजनीय राहुल जी ने सभी बजरंगियों को त्रिशूल दीक्षा का संकल्प दिलाया। साथ ही पूजनीय साध्वी दीप्ति जी ने हिन्दुओं को एक रहने की जरूरत पर बल दिया।

श्री सुरेन्द्र जैन ने कहा कि ''आज त्रिशूल दीक्षा का कार्यक्रम है। यह केवल त्रिशूल धारण नहीं है, बल्कि दीक्षा का कार्यक्रम है। हम संकल्प लेते हैं अपने राष्ट्र, धर्म, माँ–बेटी, पूज्य संतों और भारत की धरती की रक्षा का।''

दिल्ली के उपराज्यपाल महोदय का धन्यवाद करते हुए उन्होंने कहा कि दिल्ली के उपराज्यपाल श्री विनय कुमार सक्सेना जी के पहल से पहला राज्य बन गया है, जिसने बाँग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान कर उन्हें भारत से निकालने का प्रयास प्रारंभ किया है। किन्तु हमें संदेह है कि उपराज्यपाल महोदय के इस सराहनीय पहल और निर्देश का उनके प्रशासनिक अधिकारी गंभीरता से पालन करेंगे।

श्री सुरेन्द्र जैन ने कहा कि बजरंग दल के सैकड़ों कार्यकर्ता अवैध बाँग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान कर उन्हें बाहर खदेड़ने के लिए दिल्ली के उपराज्यपाल और प्रशासन को सहयोग देने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि विहिप दिल्ली ने वक्फ बोर्ड की ओर से कब्जा किए गए 123 संपत्तियों को कानूनी तौर पर आजाद करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि दिल्ली विकास प्राधिकरण के मैदान में अवैध तौर पर बनी मस्जिद के समीप रानी लक्ष्मीबाई की प्रतिमा लगवाने में भी विहिप ने अपनी भूमिका अदा की। इस मैदान का रानी लक्ष्मीबाई के नाम से आधिकारिक तौर पर नामकरण किया जाए, इसके लिए जल्द ही विहिप प्रशासन को ज्ञापन सौंपेगा। उन्होंने आगे कहा कि उत्तर प्रदेश के सम्भल में हिंसा के तथ्य ये साबित करते हैं कि यह सोची–समझी साजिश का हिस्सा था। हिन्दुओं की धार्मिक यात्राओं पर जिहादी तत्व हमले करवाते हैं और यदि स्थापित मंदिरों का कानूनी तरीके से सर्वे किया जाता है, तो भी सांप्रदायिक उन्माद फैलाने का प्रयास किया जाता है। अब ऐसे हमलों का जवाब देने के लिए बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने कमर कस ली है।

श्री जगजीत सिंह गोल्डी ने प्रान्त में 50,000 युवाओं को दीक्षित करने का संकल्प लिया और दिल्ली की सुरक्षा में बजरंग दल की अग्रणी भूमिका की आशा व्यक्त की। प्रांत अध्यक्ष श्री कपिल खन्ना ने इस अवसर पर उपस्थित सभी संतों, विहिप के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और महानुभावों का धन्यवाद किया।

vhpindraprastha@gmail.com

उज्जैन में विहिप-मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी का शक्ति संगम आयोजित

उज्जैन, 29 दिसंबर 2024। विश्व हिन्दू परिषद, मातृशक्ति, दुर्गा वाहिनी का शक्ति संगम आज उज्जैन में आयोजित किया गया। दुर्गावाहिनी प्रान्त संयोजिका ज्योतिप्रिया ने बताया कि देवी अहिल्या बाई होल्कर व रानी दुर्गावती की जयंती वर्ष में नारी शक्ति के स्वाभिमान के रूप में मध्य प्रदेश के 110 स्थान से मांन वंदना यात्रा निकाली गई थी, आज महाकाल के आंगन में शक्ति संगम के रूप में इसका समापन हुआ। इसके लिए आगर रोड स्थित सामाजिक न्याय परिसर में महा समागम हुआ। सुबह 10.00 बजे से बहनों का कार्यक्रम स्थल पर आना शुरू हो गया था। आने वाली माता बहनों का एकत्रीकरण त्रिवेणी संग्रहालय के सामने महाकालेश्वर अन्न क्षेत्र परिसर में हुआ। यहाँ से शौर्य यात्रा की शुरुआत हुई, जो गुदरी चौराहा, गोपाल मंदिर, कंठाल, निजातपुरा, कोयला फाटक होते हुए सामाजिक न्याय परिसर स्थित कार्यक्रम स्थल पर पहुँची। यात्रा में शस्त्र वाहिनी, घोष वाहिनी, ध्वज वाहिनी, साफा वाहिनी, दंड वाहिनी के रूप में बहनें उपस्थित रहीं।

यात्रा के समापन पर विराट सभा का आयोजन हुआ। मंच संचालन करते हुए आरती जायसवाल ने कहा कि हमने जब कार्यक्रम की योजना बनाई, तब 25 हजार सँख्या का अनुमान था, पर जैसे–जैसे तैयारी हुई, सँख्या बढ़ती गई और आज 35000 से अधिक बहनें हमारे बीच कार्यक्रम में उपस्थित हैं।

कार्यक्रम की भूमिका ज्योतिप्रिया ने रखी। उन्होंने कहा कि राम भक्ति और राष्ट्र भक्ति को साथ लेकर चलने वाली दीदी माँ को हम प्रणाम करते हैं। हमें गौरव है, मालवा प्रान्त में 110 स्थानों पर निकली मानवन्दना यात्रा में 50 हजार से ज्यादा बहनों ने भाग लिया। यहाँ पर बैठी बहनों में कोई डाक्टर, कोई वकील, कोई ऊद्यमी, कोई कृषक, कोई मजदूर, गृहणी, कोई शहरी क्षेत्र से हैं, कोई वनवासी बहन है, हम सभी यहाँ समरसता का भाव लेकर माँ के मुखारविन्द से राष्ट्रभक्ति, प्रभु भक्ति, हिंदुत्व की गहराई से गागर में सागर भर पाएंगे। हमें यहाँ माँ का पावन सान्निध्य मिलेगा। आज यहाँ प्रान्त के 28 जिले, 190 प्रखंड, 5810 खंड और 350 गाँव, 925 मोहल्ले से बहनें आई हैं, यहाँ मालवा का दर्शन हम कर रहे हैं, अब विधर्मी हमारी ओर आँख उठा कर भी नहीं देख सकता। हमारे संगठन का ये कार्य तो अभी बस शुरुआत है।

दुर्गावाहिनी की राष्ट्रीय संयोजिका प्रज्ञा महाला ने कहा कि मुझे गर्व हो रहा है कि आज मैं दीदी माँ के साथ मंच साझा कर रही हूँ। एक ओर देश में लव जिहाद, गौ हत्या हो रही है, हिन्दू मान बिन्दुओं पर हमले हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर आज हम देश–धर्म की रक्षा के लिए आव्हान कर रहे हैं, आज यहाँ उपस्थित हजारों बहनों की उपस्थित ये दर्शाती है कि हम विधर्मियों के हर मंसूबे को कुचल देंगे। कार्यक्रम में 21 बहनों ने महिषासुर मर्दनी का पाठ किया।

यहाँ दुर्गावाहिनी की प्रथम राष्ट्रीय संयोजिका साध्वी ऋतंभरा ने मुख्य वक्ता के रूप में सभी को मार्गदर्शन करते हुए कहा कि हमने सुना है कि साथ जहाँ बैठ जाते हैं, वह स्थान तीर्थ बन जाता है, पुत्रिओं तुम सौभाग्यशाली हो कि तुमने हिन्दू माँ के गर्भ से जन्म लिया है, भारत भूमि पर जन्म लिया है। आज समस्त भारत की अस्मिता यदि किसी पर निर्भर है, तो वह भारत की नारी पर निर्भर है। जब जगदीश को भी जन्म लेना होता है, तो वे भारत की नारी के गर्भ से जन्म लेते हैं। कोई विधर्मी जब किसी बहन को अपने चंगुल मे फंसा कर ले जाता है और उसके टुकड़े सूटकेश में मिलते हैं। राजपूत वीरांगनाओं ने जौहर को ही क्यों चुना, क्योंकि वो जानती थी कि वे मलेच्छ उनकी लाशों से भी बलत्कार करेंगे। इसलिए उन्होंने जौहर किया ताकि उनकी लाश भी उन दुराचारियों के हाथ ना लगे। ऐसे हिन्दू समाज की कोई लड़की कैसे उन मलेच्छों के साथ जा सकती है? भारत की देवियाँ यमराज का मार्ग भी रोक सकती हैं। त्रिदेव को अपने सत से शिशु बना सकती हैं। भारत

में नारी के सम्मान में लंका जलाई गई, महाभारत में शत्रु का सीना चीरकर उसका लहू पिया। आप भी शस्त्र और शास्त्र दोनों धारण करो। उन्होंने कहा कि जिसको भारत की मिट्टी से प्यार नहीं होगा, उसको भारत में रहने का अधिकार नहीं होगा, आज जो भगवा पगड़ी आपने पहनी है, वो रानी लक्ष्मीबाई की है, वो रानी दुर्गावती की है, रानी चेन्नमा की है, रानी अहिल्याबाई की है और इसका हमें मान रखना है। उन्होंने कविता कही 'कहो गर्व हम हिन्दू हैं, हिंदुस्तान हमारा है। साध्वी ऋतम्भरा जी ने आगे कहा कि एक बार शिवाजी ने कहा कि माँ आज तुम्हारा जन्मदिन है, मैं कुछ उपहार देना चाहता हूँ, तो जीजा बाई ने कहा कि सिंहगढ़ के किले पर जो अक्रान्ताओं का झंडा लहरा रहा है, मैं उसके बदले भगवा देखना चाहती हूँ। और परिणाम हम सब जानते हैं, हमारे भारत की माताओं ने भारत को ऐसे सींचा है।

मंच पर साध्वी ऋतंभरा दीदी के अलावा राधे राधे बाबा, राज्यसभा सांसद

उमेशनाथ जी, साध्वी हेमलता दीदी, दुर्गावाहिनी की राष्ट्रीय संयोजिका प्रज्ञा महाला, मातृशक्ति की राष्ट्रीय सह संयोजिका सरोज सोनी, प्रान्त अध्यक्ष मुकेश जैन, दुर्गावाहिनी राष्ट्रीय सह संयोजिका पिंकी पंवार, क्षेत्र संगठन मंत्री जितेंद्र पंवार, क्षेत्रीय मातृशक्ति संयोजिका सुनीता दीदी, क्षेत्रीय दुर्गा वाहिनी संयोजिका प्रतिमा दीदी, प्रान्त उपाध्यक्षा माला सिंह ठाकुर, प्रान्त मंत्री विनोद शर्मा, प्रान्त संगठन मंत्री खगेन्द्र भार्गव उपस्थित रहे। प्रान्त मंत्री विनोद शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

murari.shukla@gmail.com

सेवा विभाग के सेवाव्रती कार्यकर्ताओं का अभ्यास वर्ग सम्पन्न

विश्व हिन्दू परिषद के सेवा विभाग में कार्यरत पूर्णकालिक सेवाव्रती कार्यकर्ताओं का एक अभ्यास वर्ग दिनांक 26 से 29 दिसम्बर, 2024 को श्री स्वामीनारायण मन्दिर, वड़ताल, गुजरात के पावन परिसर में सम्पन्न हुआ।

अभ्यास वर्ग के उद्घाटन समारोह में केन्द्रीय सह संगठन महामन्त्री विनायक राव देशपांडे का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ तथा समापन समारोह में केन्द्रीय महामन्त्री बजरंग लाल बागड़ा ने सहभागी कार्यकर्ताओं को सम्बोधित किया। उद्घाटन एवं समापन समारोह में ही क्रमशः वड़ताल धाम के पूज्य सह कोठारी स्वामी एवं प्रमुख कोठारी स्वामी, इन दोनों पूज्य सन्तों ने भी आशीर्वाद प्रदान किया।

इस चार दिवसीय अभ्यास वर्ग में सेवा विभाग में कार्यरत पूर्णकालीन सेवाव्रती कार्यकर्ता, जिनमें मुख्यतः देशभर में सेवा विभाग के अन्तर्गत संचालित छात्रावासों, बाल कल्याण आश्रमों तथा विद्यालयों में प्रमुख बहनों, भाइयों की भूमिका है, ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

वर्ग में 22 प्रान्तों के 132 कार्यकर्तागण सहभागी हुए, जिनमें छात्रावास प्रमुख भाई, बहन 95 (72+23) तथा 37 वानप्रस्थी, अन्य कार्यकर्तागण थे। वड़ताल धाम के धार्मिक वातावरण में सम्पन्न हुए, इस अभ्यास वर्ग में कर्णावती क्षेत्र के कार्यकर्तागण के अथक परिश्रम से नियोजित व्यवस्थित प्रबन्ध व्यवस्थाओं एवं विविध सत्रों के विषय–प्रतिपादन एवं वार्तालाप की प्रेरक अनुभूतियाँ लेकर सेवाव्रती कार्यकर्तागण अपने–अपने कार्यक्षेत्रों को लौटे हैं।

sewa76@gmail.com

केन्द्रीय सोशल मिडिया प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न

विश्व हिन्दू परिषद का अखिल भारतीय सोशल मिडिया प्रशिक्षण वर्ग श्री बड़ी मारवाड़ माहेश्वरी भवन, कापसी, नागपुर, महाराष्ट्र में 28 एवं 29 दिसम्बर 2024 को कुल 11 सत्रों में सम्पन्न हुआ। उद्घाटन सत्र में गोसम्पदा पत्रिका के विशेषांक का लोकार्पण हुआ। तदुपरांत अखिल भारतीय प्रचार–प्रसार प्रमुख श्री विजय शंकर तिवारी का आरम्भिक सम्बोधन हुआ, जिसमें उन्होंने कहा कि हम सभी यहाँ शिक्षक बनने के लिए आये हैं, हम सब यहाँ से सीखकर अपने कार्यक्षेत्र में कार्यकर्ताओं को सिखाने के लिए जायेंगे। विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री मा. डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन ने अपने उद्घाटन सम्बोधन में कहा कि श्रृष्टि के आदिकाल से ही हम गौरक्षण के लिए राजा दिलीप की भांति अपना शरीर समर्पित करते आये हैं। हमारे शिवाजी गौरक्षक थे। इस्लाम के भारत में प्रवेश से मनुष्य गौहत्या करने लगा। आज गौमाता की रक्षा करने वाला सबसे बड़ा संगठन बजरंगदल है। गौहत्या के जिम्मेदार हिन्दू द्वेषी जिहादी हैं।

झूठे समाचारों और गलत विमर्शों को सत्य के आलोक में तथ्यों के आधार पर उन्हें ठीक करने की बात पर जोर दिया डॉ. जैन ने। उन्होंने कहा कि सत्य सामने लाकर झूठ और अफवाहों से समाज को भ्रमित होने से बचाना है। हमारे समाज और देश के प्रति अपना धर्म निर्वाह करना है। अपनी सभ्यता का संरक्षण करना है। वैश्विक दृष्टिकोण रखना है। हमारे दर्शन, शास्त्रों, श्रुति, स्मृति, ज्ञान परम्परा को प्रवाहमान बनाये रखना है। जीवन मूल्यों, वृत्तियों को नष्ट करने वालों से, शव से लेकर पशु तक से सेक्स करने वाले मनोरोगियों से, उनकी विकृत मानसिकता से देश को बचाने में अपनी भूमिका तय करना है। कालजयी संस्कृति, मृत्युञ्जय संस्कृति अजर–अमर है, लेकिन इसे नष्ट करने का प्रयत्न हो रहा है, तो इसे बचाना जरूरी है, शांतिकाल के लिए भी और संघर्ष के लिए भी। हम विजय की ओर जा रहे हैं। सनातन को नष्ट करने वाली शक्तियाँ नष्ट हो रही हैं। हम औरंगजेब, गजनी,

गौरी के समय खतरे में नहीं थे, तब आज कैसे खतरे में होंगे? सम्पूर्ण जगत में मौलिक शांति हिन्दू धर्म–दर्शन ही ला सकता है। अमेरिकन पत्रकार ने द वीक में लिखा कि जीवनशैली से अब हम हिन्दू हैं। हिन्दू खतरे में नहीं है। हम विजय की ओर बढ़ रहे हैं। हम उदार हैं, कायर नहीं। गीता कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग बताते हुए अहिंसा परमो धर्मः बताता है, तो धर्महिंसा तथैव च भी बताता है। विश्व बन्धुत्व का यह दर्शन जीने वाला हिन्दू अब विजयी होने वाला है। हम युवाओं के माध्यम से सोशल मिडिया से और मुख्यधारा की मिडिया के माध्यम से अपनी बात समाज तक पहुँचाएँगे। हम अपने स्व के आधार पर हिन्दूत्व को आगे बढ़ाएंगे। विश्व हिन्दू परिषद विश्व का सबसे बड़ा ईकोसिस्टम खड़ा कर सकता है– बीगेस्ट हिन्दू ईकोसिस्टम।

उन्होंने आगे कहा कि हम एक ग्रन्थ तक सीमित नहीं, हमारे उत्सव देशव्यापी मनाए जाते हैं। कोई हिन्दू अपना नाम छुपाकर मुसलमान से आजतक विवाद नहीं किया। हिन्दू अपना परिचय छुपाकर व्यापार नहीं करता है। हिन्दू माफिया के पक्ष में कभी हमारे संत नहीं आते, लेकिन अतिक, मुख्तार, अफजल, याकूब के समर्थन में सैकड़ों मौलाना खड़े हो जाते हैं। हिन्दू आक्रांता नहीं पीड़ित है। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बॉंग्लादेश इस्लाम के नाम पर बने हैं। मॉब लांचिंग हिन्दूओं का सबसे अधिक हुआ, 30 लाख हिन्दू अबतक लिंच किए गए। 30 करोड़ हिन्दूओं का धर्मांतरण हुआ है। फिर भी इस देश में इस्लामोफोबिया नहीं, काफिरोफोबिया फैलाया जा रहा है। नफरत के जिम्मेदार जिहादी काफिरोफोबिया से ग्रस्त हैं। हिजाब जिहाद, मुताह निकाह नाम की वेश्यावृति, खतना–महिलाओं का खतना, हलाला चलाने वाले लोग, थूक और मूत का जिहाद चलाने वाले लोग हमसे नफरत करते रहे हैं। नफरत से ही ये सारी जिहादी हरकते करते हैं।

फेसबुक, इंस्टाग्राम, वाट्सऐप, यूट्यूब, ट्वीटर (एक्स), फोटो एवं विडियो एडिटिंग, कंटेंट क्रियेशन, मिडिया वाच, सिटीजन जर्नलिज्म, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, कंटेंट डिसेमिनेशन एंड मेसेंजिंग ऐप इत्यादि विषयों पर अलग–अलग सत्रों में प्रशिक्षण दिया गया। केन्द्रीय सोशल मिडिया प्रमुख राकेश पाण्डेय मंच पर कम व्यवस्था में अधिक व्यस्त दिखाई दिए। उनके कुशल प्रबंधन से मंचीय गतिविधियाँ सुचारू रूप से संचालित होती रहीं और सभी सत्र उच्च गुणवत्तापूर्ण हुए।

समापन सत्र में श्रीमान विजय शंकर तिवारी जी ने कहा कि भारत कभी आक्रमण नहीं करता, आक्रमण का जबाब देता है। हम षड्यंत्रकारी नहीं, हम षड्यंत्रकारियों का उच्छेद करने का प्रशिक्षण ले रहे हैं। कंटेंट की कमी होने से हिन्दू द्वेषियों को झूठ का सहारा लेना पड़ता है, हमारे पास कंटेंट की भरमार है। शास्त्रों का संकुल एक बड़ा कंटेंट है हमारे पास। कार्यकर्ता आवश्यक हैं कंटेंट डिसेमिनेशन के लिए। जो काम हमें संगठन ने सौंपा है, उस युद्ध के विजेता हम ही होंगे।

पटना (बिहार) में विहिप–विशेष संपर्क विभाग द्वारा आयोजित 'वर्तमान चुनौतियों में अपनी भूमिका' विषय पर विचार गोष्ठी को संबोधित करते विहिप केन्द्रीय मंत्री एवं विशेष संपर्क विभाग के अ.भा. प्रमुख श्री अंबरीश सिंह जी

विश्व हिन्दू परिषद के युवा संगठन बजरंग दल की शौर्य जागरण यात्रा के बाद विशाल जनसभा को संबोधित करते विहिप क्षेत्र संगठन मंत्री श्री सोहन सोलंकी जी, कार्यक्रम में उपस्थित बजरंग दल, मातृशक्ति, दुर्गावाहिनी की कार्यकर्त्रियाँ।

दिल्ली में विहिप–मंदिर अर्चक पुजारी आयाम द्वारा आयोजित अर्चक पुजारी सम्मेलन

वड़ताल (गुजरात) में विहिप सेवा विभाग के सेवाव्रती कार्यकर्ताओं के अभ्यास वर्ग में उपस्थित विहिप सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे तथा अ.भा. सेवा प्रमुख श्री अजेय पारीक जी

नागपुर में विहिप–प्रचार प्रसार विभाग द्वारा आयोजित अ.भा. सोशल मीडिया प्रशिक्षण वर्ग में प्रशिक्षार्थियों के साथ उपस्थित विहिप केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन तथा प्रचार प्रसार प्रमुख श्री विजयशंकर तिवारी

उत्तर गुजरात प्रांत के नडियाद जिले में सामाजिक समरसता विभाग द्वारा आयोजित समरसता संगोष्ठी को संबोधित करते विहिप सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 13.01.2025
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी